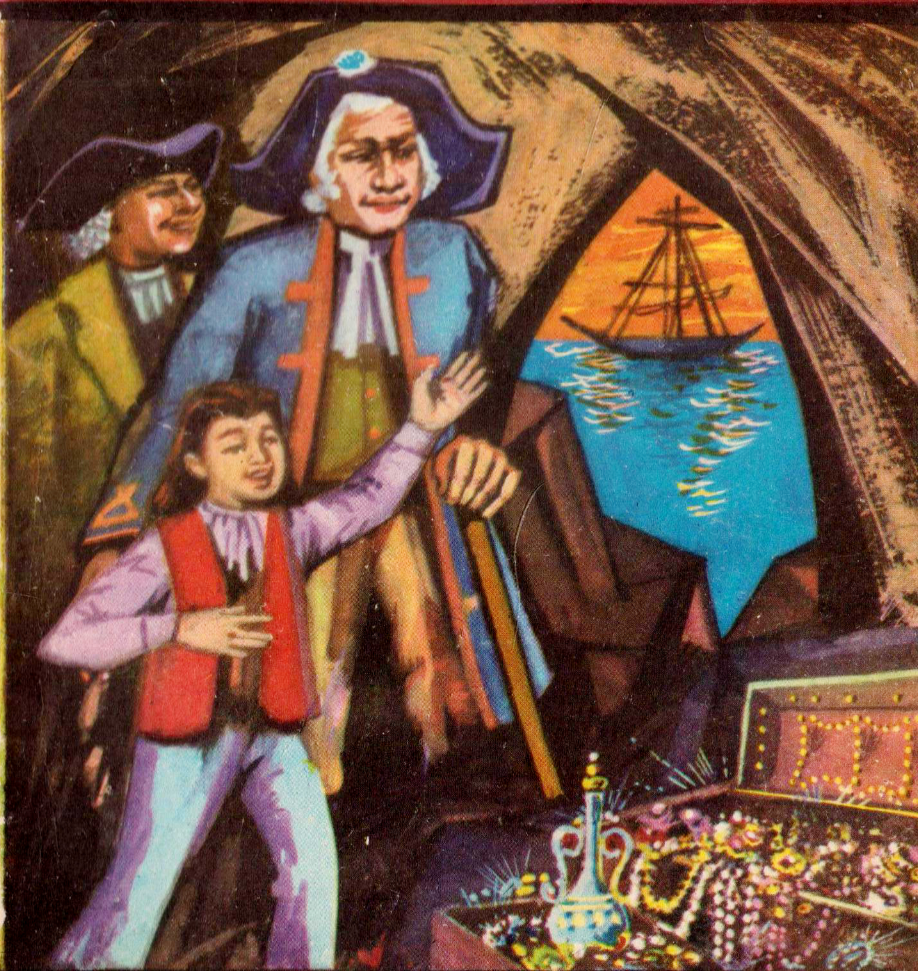
खज़ाने की खोज में



आर० एल० स्टीवेन्सन के प्रसिद्ध उपन्यास
'ट्रेज़र आइलैण्ड' का सरल रूपांतर

आर० एल० स्टीवेन्सन के उपन्यास TREASURE ISLAND
का सरल हिन्दी रूपान्तर

मूल्य : चार रुपये (4.00)

संस्करण 1981
KHAZANE KI KHOJ MEIN (Novel) by R.L. Stevenson

खज़ाने की खोज में

रूपान्तरकार : श्रीकान्त व्यास



शिक्षा भारती, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली

खज़ाने की खोज में



बहुत दिन पहले की बात है, मेरे पिता की एक सराय थी। अक्सर उसमें दूर-दूर के मुसाफिर आकर ठहरा करते थे। सराय का नाम था 'एडमिरल बेनवो'। एक दिन एक मुसाफिर वहां आया। देखने से वह कोई जहाजी मालूम होता था। उसके पीछे-पीछे एक कुली था। कुली ने अपने सिर पर लोहे का एक सन्दूक उठा रखा था। वह जहाजी लम्बा-तड़ंगा और बहुत तगड़ा था।

उस समय मेरी उम्र बहुत कम थी, लेकिन फिर भी मैं उस जहाज़ी की बात आज तक नहीं भूल सका हूं। मुझे अच्छी तरह याद है, उसके दाहिने गाल पर तलवार के घाव का निशान था। पहले दिन जब वह सराय में आया, वह कोई गाना गुनगुना रहा था। उसके हाथ में एक तलवार थी।

आते ही उसने दरवाज़ा खटखटाया। मेरे पिता ने दरवाज़ा खोला। दरवाज़े के खुलते ही वह बोला, "मुझे बड़ी प्यास लगी है। एक प्याला शराब ले आओ। मैं जहाज़ का कप्तान हूं। यहां कुछ दिन रहना चाहता हूं।"

उसकी आवाज़ इतनी कड़ी थी कि सुनकर डर लगता था। मेरे पिता कुछ हिचकिचाए, लेकिन फिर बोले, "आओ, तुम अन्दर चले आओ।"

जहाज़ी अन्दर चला आया। कुली ने अन्दर आकर एक कोने में उसका सन्दूक रख दिया और फिर पैसे लेकर चला गया। उसके जाने के बाद जहाज़ी ने मेरे पिता से कहा, "मेरे खाने-पीने के लिए तुम कोई ज्यादा झंझट न करना। जो कुछ मिल जाएगा उसीसे काम चला लूंगा।"

जो कुली उसका सामान लाया था, उससे पूछने पर पता चला कि वह जहाज़ी सचमुच किसी छोटे जहाज़ का कप्तान था। वह उसी दिन सवेरे जहाज़ से उतरा था और सबसे पहले हमारी ही सराय में आया था।

वह जहाज़ी अकेले रहना पसन्द करता था। भीड़-भाड़ में उसे बड़ी तकलीफ होती थी। उसके पास पीतल की एक दूरबीन थी। दिन-भर दूरबीन लेकर वह इधर-उधर घूमा करता था। कभी किसी पहाड़ी पर चढ़ता और वहां से आस-पास का दृश्य देखता, तो कभी किसी पेड़ पर चढ़कर बैठा रहता था। शाम होते ही सराय में लौट आता था और एक कोने में बैठा रहता था। वह चुपचाप बैठा आग तापता था; और शराब पीता रहता था। न किसीसे बोलता था और न किसीकी बात का जवाब देता था। अगर कोई उसे तंग करता था, तो उसे इतना गुस्सा आता था कि उसकी आंखें लाल हो जाती थीं और नाक फड़कने लगती थी।

एक दिन कप्तान ने मुझे अपने पास बुलाया और कहा, "लो, यह एक रुपया लो! अच्छा बताओ, तुम मेरा एक काम कर दोगे? अगर रास्ते में तुम्हें कोई लंगड़ा जहाज़ी दिखाई दे, तो तुम फौरन आकर मुझे इसकी खबर देना। तुम्हें बराबर इस बात का ध्यान रखना पड़ेगा। एक तरह से मैं तुम्हें एक लंगड़े जहाज़ी को खोजने का काम सौंप रहा हूं। इसके बदले में मैं तुम्हें एक रुपया महीना दिया करूंगा। लेकिन याद रखना, यह बात और किसी को मालूम न होने पाए।"

रुपया पाकर मैं बहुत खुश हुआ और चुपचाप उस जहाज़ी

का काम करने लगा। रोज़ सड़कों पर इधर-उधर घूमकर मैं उस लंगड़े को खोजने लगा। उस लंगड़े का मुझे इतना ध्यान रहने लगा कि हर समय मुझे उसकी सूरत नज़र आने लगी। सपने में भी उस लंगड़े को देखने लगा। अक्सर मैं नींद में चिल्ला-कर लंगड़े के पीछे दौड़ता था और मेरी नींद खुल जाती थी।

कप्तान सराय में किसीसे मिलता-जुलता नहीं था, और न कोई उसके पास जाता था। रात में वह काफी देर तक सोता नहीं था। शराब पीता था और जहाज़ियों का कोई गीत गाता रहता था।उसकी आवाज़ बहुत मोटी थी। पूरी सराय उससे गूंजती रहती थी। सब लोगों को उसके साथ गाना पड़ता था, वरना वह नाराज़ हो जाता। कभी-कभी वह गाते-गाते एकदम से चीख पड़ता था, "बन्द करो! बन्द करो! तुममें से किसी-को भी गाना नहीं आता।"

सब लोग चुप हो जाते थे। कभी-कभी वह कहानी सुनाने लग जाता था। उसकी कहानियां भी बड़ी अजीब होती थीं। कभी वह दूर देशों की यात्राओं की कहानियां सुनाता था, तो कभी चोर, डाकू और लुटेरों की। अगर कोई बीच में बोलता था तो उसे वह फौरन डांट देता था।

इस तरह सराय में रहते हुए काफी दिन हो गए। वह वहां से जाने का काम नहीं लेता था। ऐसा लगता था, जैसे उसे वह जगह पसन्द आ गई थी। लेकिन उसका सारा हिसाब उधार चलता था। उसपर बहुत ऋण चढ़ गया था। मेरे पिता बड़े संकट में पड़े हुए थे। वे अगर कभी उससे पैसा मांगते थे, तो वह फौरन आंखें निकालकर उन्हें डांटने लगता था। पिताजी डरकर उसके कमरे से चले आते थे।

कप्तान जिस सन्दूक को लेकर पहली बार हमारे यहां आया था, वह तब से बराबर बन्द था। हमने कभी उसे सन्दूक को खोलते नहीं देखा। वह कभी किसीको चिट्ठी भी नहीं लिखता था। शायद उसका कोई नहीं था। किसीसे उसके बारे में

शिकायत भी नहीं की जा सकती थी।

एक दिन की बात है, मेरे पिता को बहुत तेज़ बुखार आया। मैं जाकर पिता के एक मित्र डाक्टर लिवेसे को बुला लाया। जिस समय डाक्टर आया, उस समय कप्तान आंगन में शराब पीकर, नशे में चूर पड़ा था। डाक्टर ने ऊपर आकर मेरे पिता को देखा और नुस्खा लिख दिया। लेकिन तब तक उसकी गाड़ी नहीं आई थी। इसलिए वह बाहर बैठकर इन्तज़ार करने लगा। इतने में रात हो गई। थोड़ी देर में कप्तान ने अपनी भद्दी आवाज़ में ज़ोर-ज़ोर से गाना शुरू किया।

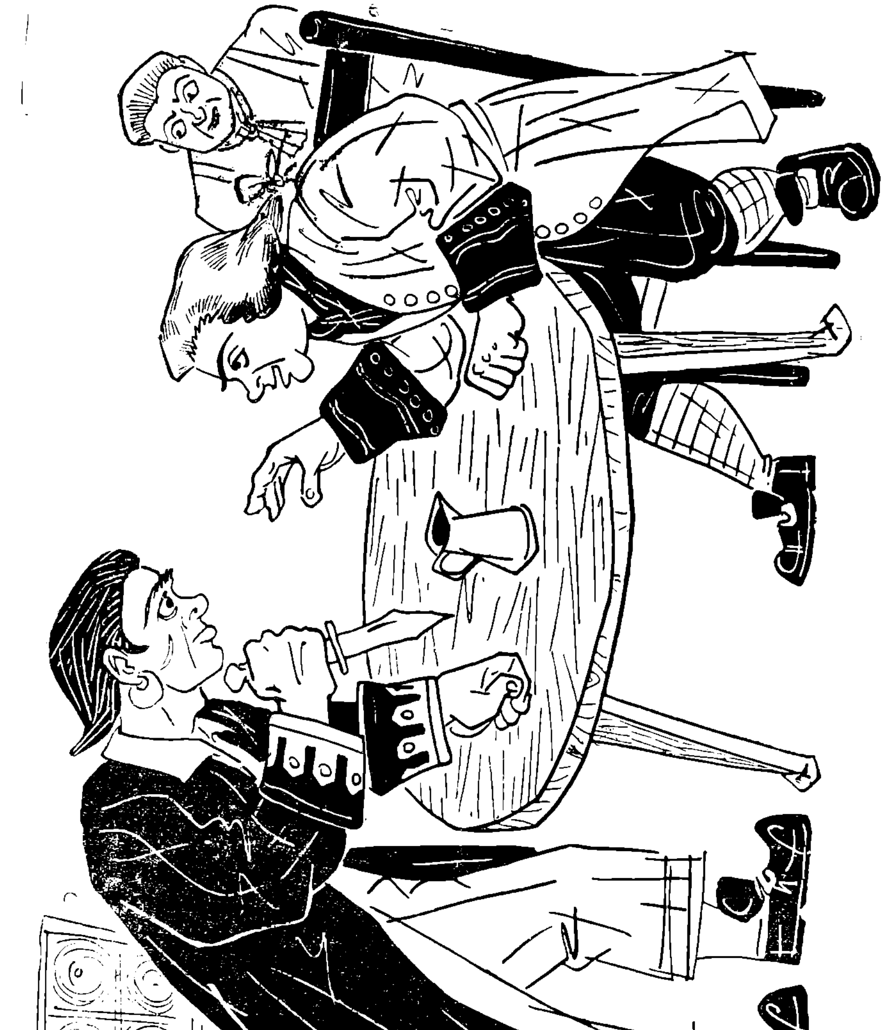
डाक्टर वहीं बैठा था। उसको कप्तान का गाना पसन्द नहीं आया। डाक्टर नाराज़ होकर उसे घूरने लगा। यह देखकर कप्तान और भी ज़ोर-ज़ोर से चीख-चीखकर गाने लगा और मेज़ पर हाथ पटकने लगा। असल में मेज़ पर हाथ पटकने का मतलब यह होता था कि सब लोग चुप हो जाएं। लेकिन डाक्टर उस समय पास बैठे हुए एक आदमी से बातें कर रहा था। उसने जान-बूझकर अपनी बातें बन्द नहीं कीं। पहले तो कप्तान ज़ोर-ज़ोर से मेज़ पर हाथ पटकता रहा और फिर चीखकर बोला, "चुप रहो! खामोश!"

यह सुनकर डाक्टर बोले, "क्या है, मुझे कुछ कह रहे हो?"

कप्तान बोला, "हां, हां, तुम्हें ही कह रहा हूं। क्या इतनी भी अक्ल नहीं है तुममें?"

उसकी यह बात डाक्टर को और भी बुरी लगी। उसने उसे डांटते हुए कहा, "तुम अपना यह भद्दा गाना बन्द करो और मेरी एक बात सुनो! तुम शराब बहुत पीते हो। और ज्यादा शराब पियोगे तो मर जाओगे!"

लेकिन यह सुनकर कप्तान फौरन उछलकर खड़ा हो गया, और अपनी जेब से एक छुरा निकाल लिया। लेकिन डाक्टर घबराया नहीं। उसने उसे झिड़ककर कहा, "बेवकूफ, छुरा अपनी जेब में रख, वरना फांसी पर चढ़ना पड़ेगा!"



कप्तान आगबबूला हो उठा। उसका बस चलता तो वह डाक्टर को कच्चा चबा जाता। लेकिन डाक्टर बड़ा निडर आदमी था। उसने डांटते हुए कहा, "यह न समझना कि मैं सिर्फ डाक्टर ही हूं, मैं यहां का मजिस्ट्रेट भी हूं। याद रखना, अगर यहां तुमने कुछ गड़बड़ की तो तुम्हें बहुत कड़ी सज़ा दी जाएगी!"

इतने में डाक्टर की गाड़ी तैयार होकर आ गई। डाक्टर उसपर चढ़कर वहां से चला गया।

कप्तान शायद सचमुच डाक्टर से डर गया था। क्योंकि उस शाम को वह शान्त रहा और बाद में कई दिनों तक उसने कोई उत्पात नहीं किया।



2

मेरे पिता की बीमारी बढ़ती ही जा रही थी। वे बराबर बिस्तर पर पड़े रहते थे। इसलिए सराय की देख-भाल का काम मेरी मां और मुझपर आ पड़ा। हम लोग जहां तक होता था, कप्तान से दूर रहते थे कि किसी तरह कप्तान से हमारा पिंड छूटे।

जाड़े के दिन थे। सवेरे का समय था। बहुत ठंडी हवा चल रही थी। हल्का-हल्का कोहरा भी था। रात को बर्फ भी गिरी थी। ऐसा लगता था, जैसे चारों तरफ रुई बिखरी हो। ऐसे समय में कप्तान घूमने निकला। हमेशा की तरह उसके हाथ में आज भी दूरबीन थी। कमर में तलवार लटक रही थी। अक्सर ऐसा होता था कि वह काफी दिन चढ़ने के बाद ही घूमने निकलता था, लेकिन उस दिन न मालूम क्यों, मुंह-अंधेरे ही निकल पड़ा था।

उस समय मां पिताजी की देख-भाल कर रही थी और मैं नीचे ग्राहकों के खाने की मेज़ ठीक कर रहा था। उसी समय एक आदमी अन्दर आया। उसका चेहरा काफी दुबला-पतला-सा था। उसके बायें हाथ की दो अंगुलियां भी कटी हुई थीं। कमर में वह भी तलवार बांधे था। अन्दर आकर उसने इशारे से मुझे अपने पास बुलाया। मैंने यह देखने के लिए कि कहीं यह लंगड़ा तो नहीं है, झुककर उसके पैर देखे। लेकिन उसके दोनों पैर मुझे सही-सलामत मालूम हुए। अपने पास बुलाकर उसने मुझसे पूछा, "क्यों जी, क्या उस टेबल पर तुम मेरे दोस्त बिल के लिए नाश्ता लगा रहे हो?"

मैंने कहा, "मैं किसी बिल को नहीं जानता! यहां तो अभी कप्तान आकर नाश्ता करेगा। मैं उसी की तैयारी कर रहा हूं।"

वह आदमी बोला, "हां-हां, वही! जिसे तुम कप्तान कह रहे हो, उसे ही हम लोग बिल कहते हैं। उसके दाहिने गाल पर तलवार की चोट का निशान है। है न?"

"ठीक है, लेकिन कप्तान इस समय अन्दर नहीं है। घूमने गया है।"

"घूमने! इतनी सवेरे? किस तरफ गया है? क्या तुमने उसे जाते हुए देखा था?"

"हां, वह उधर पहाड़ियों की तरफ घूमने जाता है।"

"तुम बता सकते हो, वह कब तक लौटेगा?"

मैंने कहा, "बस, अब लौटकर आता ही होगा।"

यह सुनकर वह आदमी कुछ चौंका, और फिर मेरा हाथ खींचते हुए बोला, "आओ, ज़रा हम लोग उस दरवाज़े के पीछे छिप जाएं।" यह कहकर वह मुझे एक किवाड़ की ओट में खींच ले गया। ऐसे में कुछ देर बाद कप्तान लौट आया। उस समय कप्तान बहुत जल्दी में था। वह सीधा आकर अपनी टेबल पर बैठ गया और नाश्ता करने लगा। यह देखकर वह आदमी दरवाज़े से सिर निकालकर बोला, "बिल, मुझे पहचान रहे हो ना?"

उसकी आवाज़ सुनकर बिल चौंक पड़ा और उसे देखते ही उछलकर खड़ा हो गया। और बोला, "कौन, ब्लैक डाग ?"

"हां, मैं ब्लैक डाग ही हूं। भला यहां तुमसे मिलने और कौन आ सकता है ! मैं तुम्हें एक बात कहने आया हूं।"

कप्तान बोला, "देखो, तुम बेकार मेरे पीछे लगे हो। जो कुछ कहना हो जल्दी कह डालो।"

वह आदमी कप्तान के पास आकर कुछ डरते-डरते उसके सामने कुर्सी पर बैठ गया। मैं उन दोनों के लिए शराब ले आया। लेकिन वे लोग कुछ बातें कर रहे थे। मुझे पास आते देखकर उस आदमी ने कहा, "लड़के, तुम ज़रा यहां से बाहर चले जाओ ! हम लोगों को कुछ खास बातें करनी हैं।

मैं बाहर तो चला गया, लेकिन उन लोगों की बातचीत सुनने से अपने को रोक न सका। दरवाज़े के पास ही कान लगाकर खड़ा हो गया। पहले तो वे लोग बहुत धीरे-धीरे बातें करते रहे। मुझे कुछ सुनाई ही नहीं दिया। फिर दोनों ज़ोर से बोलने लगे। मैंने सुना कप्तान कह रहा था, "नहीं, नहीं ! मुझे इससे कोई मतलब नहीं ! तुम जाओ यहां से।"

अब दोनों चीख-चीखकर बोलने लगे और एक-दूसरे को गाली देने लगे। फिर मुझे लगा कि वे आपस में हाथापाई भी कर रहे थे। टेबल-कुर्सी के गिरने और टूटने की आवाज़ आने लगी और फिर ऐसा लगा, जैसे दोनों ने तलवारें निकाल लीं। सचमुच, तलवारें खनकने लगीं। इतने में ब्लैक डाग को मैंने जान बचाकर भागते देखा। उसके हाथ में तलवार थी और उसके बायें कन्धे से खून बह रहा था। कप्तान ने लपककर उसका पीछा किया, लेकिन ब्लैक डाग बच गया और वहां से भाग निकला। कप्तान अपना मुंह पोंछता हुआ अन्दर आ गया। उसका सारा शरीर कांप रहा था। दीवार का सहारा लेकर उसने मुझे आवाज़ दी, "जिम !"

मैं फौरन दौड़ता हुआ अन्दर पहुंचा और पूछने लगा, "क्या हुआ ? तुम्हें चोट आई है क्या ?"

लेकिन कप्तान ने मेरी बात का कोई जवाब नहीं दिया और कहा, "शराब लाओ, फौरन शराब लाओ ! अब मैं यहां नहीं रहूंगा। जल्दी ही चला जाऊंगा !"

मैं उसके लिए शराब लेने अन्दर गया। इतने में बाहर ज़ोर की आवाज़ हुई। मैं लपककर बाहर आया और यह देखकर घबरा गया कि कप्तान मुंह के बल ज़मीन पर गिर पड़ा था। मैं फौरन दौड़ा गया और मां को बुला लाया। हम लोगों ने कप्तान का चेहरा देखा और बुरी तरह घबरा गए। उसका रंग उड़ गया था। वह आंखें बन्द करके तेज़ी से सांस ले रहा था। मेरी मां बोली, "यह और एक नई आफत आई ! उधर तुम्हारे पिता बीमार पड़े हैं और यहां सराय का यह हाल है ! अब क्या होगा ?"

हमारी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या किया जाए। इतने में सौभाग्य से वहां डाक्टर लिवेसे आ पहुंचा। वह मेरे पिताजी को देखने आया था। उसने आकर कप्तान की जांच की और कहा, "घबराने की कोई बात नहीं है। यह शराब बहुत पीता है ! मैं पहले ही जानता था कि किसी न किसी दिन इसका बुरा हाल होगा। जाओ, कोई बर्तन ले आओ। इसके हाथ की एक नस काटकर इसके शरीर से कुछ खून निकालना पड़ेगा, तब यह होश में आएगा।

मैं दौड़कर एक तसला ले आया। तब तक डाक्टर ने कप्तान के हाथ से कपड़े अलग कर दिए थे। मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि कप्तान का हाथ बहुत तगड़ा था। डाक्टर ने अपने झोले में से एक छुरी निकालकर कप्तान के हाथ की नस काट दी। खून बहने के बाद कप्तान होश में आ गया और बोला, "वह कहां गया ? ब्लैक डाग कहां गया ?"

डाक्टर ने उसे बोलने से मना करते हुए कहा, "बको मत, यहां कोई नहीं है। मैंने तुमसे कहा था कि तुम शराब ज्यादा न पिया करो, लेकिन तुमने मेरी बात नहीं मानी। अब भी मान जाओ, तो तुम्हारा लाभ होगा।" फिर उसने हमारी ओर मुड़-

कर कहा, "इसे ऊपर ले जाकर इसके बिस्तर में सुला दो।"

बड़ी मुश्किल से हम उसे ऊपर ले गए। उसे बिस्तर में पटककर हम लोग बाहर निकल आए। डाक्टर ने कहा, "अब कोई डर की बात नहीं है। इसका बहुत-सा खून मैंने निकाल दिया है। इसलिए कम से कम सात दिन तक तो यह बिस्तर में ही पड़ा रहेगा। लेकिन इसे कह देना कि अब अगर यह शराब पिएगा तो ज्यादा दिन ज़िन्दा नहीं बचेगा।"



3

दोपहर का समय था। पिताजी को दवा पिलाने के बाद मैं कप्तान के कमरे में गया। वह बिस्तर में पड़ा था। मुझे देखकर वह बोला, "जिम, तुम तो मेरे बहुत अच्छे दोस्त हो; ज़रा मेरा एक काम करो ना। जाओ, एक प्याला शराब ले आओ।"

मैंने कहा, "लेकिन डाक्टर ने तो···"

मुझे बीच में ही रोककर वह डाक्टर को गाली देने लगा और बोला, "तुम्हारा डाक्टर बहुत बड़ा बेवकूफ है। उसका नाम न लो। भला वह मेरे रोग को क्या जाने! शराब से मुझे कुछ नहीं होता। उलटे उससे मुझे फायदा होता है। हम जहाजियों के लिए शराब बहुत जरूरी चीज़ है। अगर हम शराब न पिएं, तो अपना काम कैसे करें। देखो न, शराब के बिना मेरी क्या हालत हो गई है। हाथ-पैर कांप रहे हैं। जाओ, एक प्याला ले आओ। जाओ, मैं तुम्हें सोने की मोहर दूंगा।"

कप्तान शराब के बिना बहुत बेचैन था। उसकी हालत देख-

कर मैं कुछ घबरा गया। उस दिन मेरे पिता की हालत भी अच्छी नहीं थी। इसलिए मैंने कप्तान को शान्त करने के लिए एक प्याला शराब लाकर दे दी।

कप्तान एक घूंट में ही उसे पी गया और बोला, "हां, अब कुछ ठीक लगता है। अच्छा यह तो बताओ जिम, तुम्हारे उस मूर्ख डाक्टर ने मुझे कितने दिन तक बिस्तर में पड़े रहने को कहा है?"

"आठ दिन तक।"

"क्या? आठ दिन तक? यह कैसे हो सकता है। मेरा तो सब कुछ बर्बाद हो जाएगा। वे लोग मेरे पीछे पड़े हैं। उन लोगों से अपना माल तो बचाते बनता नहीं, दूसरे के माल पर मरे जाते हैं। मैंने अपना पैसा खर्च नहीं किया? मुझे किसी का डर नहीं है।" यह कहते-कहते उसने हाथों से अपना सिर थाम लिया और एक आह भरकर बोला, "डाक्टर ने तो कमर ही तोड़ दी। मैं तो कहीं जाने लायक भी नहीं रहा। सिर में बहुत तेज़ दर्द हो रहा है।"

थोड़ी देर तक चुपचाप पड़े रहने के बाद वह फिर बोला, "क्यों जिम, क्या आज तुमने उस आदमी को देखा था? अरे वही ब्लैक डाग? वह बहुत खराब आदमी है। अब मुझे यहां से चले जाना पड़ेगा, वर्ना वे लोग मुझे बर्बाद कर देंगे। असल में वे मुझसे मेरा सन्दूक छीनना चाहते हैं।" फिर कुछ देर रुककर उसने पूछा, "क्यों जिम, तुम घोड़े पर चढ़ सकते हो? अच्छा, ठीक है, तो जाओ, तुम डाक्टर को, जो यहां का मजिस्ट्रेट भी है, बुला लाओ। उससे यह कह आना कि अपने साथ अपने साथियों और दूसरे लोगों को भी लेता आए। मैं उसे बताऊंगा कि मैं ही फ्लिंट का पहला साथी था। मैं ही उस जगह को जानता हूं। मरते समय फ्लिंट मुझे नक्शा सौंप गया था। खैर, मुझे इस बात का कोई डर नहीं है कि ये लोग मुझे 'काला निशान' दे देंगे। सबसे ज्यादा डर तो मुझे उस लंगड़े खलासी से लगता है।"

मैंने उससे पूछा, "कप्तान 'काला निशान' क्या चीज़ है ?"

"यह असल में एक तरह का संदेश है। अगर यह मुझे मिला, तो मैं तुम्हें इसके बारे में कभी सारा किस्सा बताऊंगा। लेकिन तुम इस बीच में चारों तरफ कड़ी नज़र रखना और जब भी कभी तुम्हें वह लंगड़ा दिखाई दे, तो मुझे आकर खबर देना। इतना मैं तुम्हें पहले ही बता दूं कि मैं आधा हिस्सा तुम्हें दूंगा और आधा मेरा रहेगा। लेकिन तुम ज़रा आंख खोलकर रहना। वह लंगड़ा चालाक आदमी है।"

इसके बाद काफी देर तक कप्तान तरह-तरह की बातें करता रहा। मैंने उसे दवा पिला दी। जब वह ऊंघने लगा तो मैं उसके कमरे से चला आया। उसी दिन मेरे पिता की तबीयत बहुत खराब हो गई। शाम को पिताजी चल बसे। घर में रोना-पीटना शुरू हो गया। दूसरे दिन कप्तान की हालत देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। मैंने देखा कि कभी वह सीढ़ी पर चढ़ता था और कभी वह नीचे उतरता था। कभी दौड़कर बाहर जाता था और फिर अन्दर लौट आता था। कहीं भी चुपचाप नहीं बैठता था। यहां तक कि एक बार तो उसने तलवार निकालकर टेबल पर रख दी और फिर जाकर दरवाज़े में खड़ा हो गया। थोड़ी ही देर में वह फिर अन्दर लौट आया। मुझे उसका चेहरा देखकर डर लगने लगा। वह बुरी तरह घबराया हुआ था। इस तरह बेचैन मैंने उसे कभी नहीं देखा था। उसके पैर लड़खड़ा रहे थे, लेकिन फिर भी वह कहीं बैठा नहीं था। इसी तरह दिन कट गया।

शाम को मैं यों ही सराय के दरवाज़े के पास खड़ा था और अपने पिता को याद कर रहा था। मेरा मन बहुत उदास था। उसी समय मैंने देखा कि रास्ते पर एक आदमी धीरे-धीरे चला आ रहा था। जब वह सराय के कुछ पास आया, तो मैंने देखा कि वह अन्धा था। ज़मीन पर लकड़ी खटखटाते हुए वह धीरे-धीरे आगे बढ़ता था। उसने अपनी आंख और नाक के ऊपर एक हरा कपड़ा बांध रखा था। वह कुछ कुबड़ा भी था और

बहुत ही दुबला-पतला था। उसके जैसा बदसूरत और डरावना चेहरा मैंने आज तक नहीं देखा था।

मैंने तो सोचा कि वह कहीं और जा रहा होगा, लेकिन वह सीधा आकर सराय के सामने खड़ा हो गया। फिर उसने एक अजीब-सी आवाज़ में पूछा, "अरे भाई, कोई इस अन्धे आदमी को बता सकता है कि यह कौन-सी जगह है? मैं कहां आ पहुंचा है? हाल ही में मैंने अपने देश की रक्षा करते हुए, अपनी आंखें खो दी हैं। कोई मेरी मदद कर दो।"

मैंने उससे कहा, "अरे भाई, तुम तो मेरी सराय के सामने आ पहुंचे हो, सराय का नाम है एडमिरल बेनवो!"

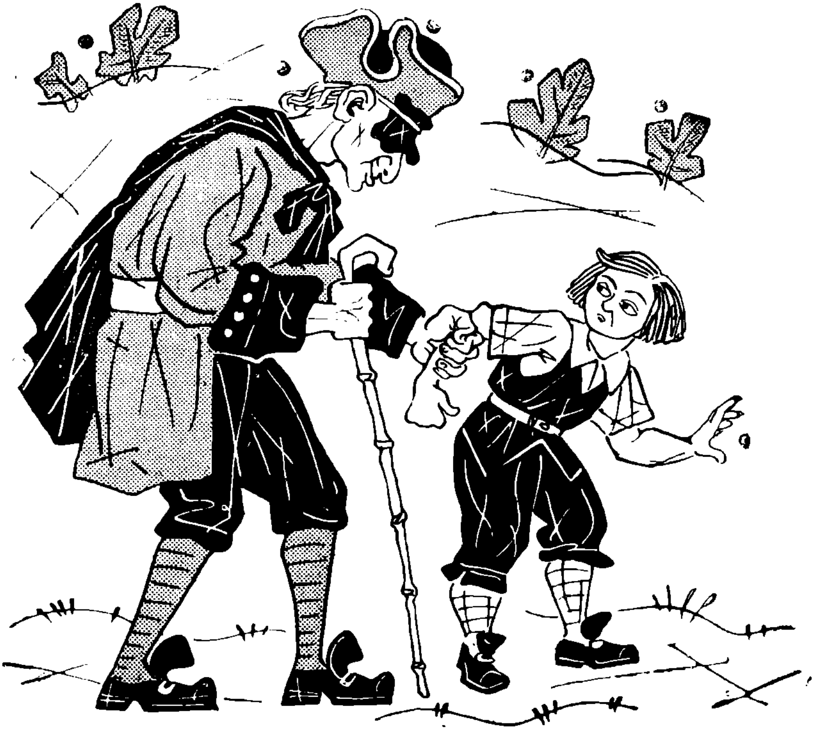
मेरी आवाज़ सुनकर वह अन्धा बोला, "आवाज़ से तो लगता है कि मैं किसी बच्चे से बात कर रहा हूं! बेटा, ज़रा हाथ थामकर मुझे अन्दर पहुंचा दो।"

मैंने अपना हाथ आगे बढ़ा दिया। उसने बहुत ज़ोर से कस-कर मेरा हाथ पकड़ लिया। उसकी नरम आवाज़ से तो मैं सपने में भी नहीं सोच सकता था कि उसमें इतनी ताकत होगी। उसने इस तरह कसकर हाथ पकड़ा कि मुझे लगा, मेरी हड्डी ही टूट जाएगी। फिर वह मुझे अपनी ओर खींचकर बोला, "बेटा ज़रा मुझे एक बार कप्तान के पास पहुंचा दो!"

मैंने कहा, "कप्तान का दिमाग आजकल ठीक नहीं है। उसके पास जाने की मुझे हिम्मत नहीं होती।"

अन्धे ने मेरा हाथ ज़ोर से ऐंठते हुए कहा, "चुपचाप मुझे उसके पास ले चलो, वरना तुम्हारा हाथ तोड़ दूंगा।"

मेरे मुंह से एक चीख निकल गई। मैंने अपना हाथ उससे छुड़ाने की कोशिश की, लेकिन ऐसा लगता था जैसे उसने फौलादी मुट्ठी में मेरा हाथ कस रखा हो। उसकी पकड़ से छूट निकलना संभव नहीं था। मैंने उससे कहा, "असल में, मैं तुम्हारे भले के लिए ही कह रहा हूं। कप्तान तलवार लेकर बैठा है। उसके पास जाना ठीक नहीं है।"



लेकिन वह बुड्ढा मुझे धमकाते हुए बोला, "चुप रहो, बेकार बको मत। चुपचाप मुझे उसके पास ले चलो।"

मैं अजीब मुसीबत में फंसा था। अन्त में मजबूर होकर मुझे उसे अन्दर लाना पड़ा। वह बार-बार मेरा हाथ मरोड़कर कहता था, "चलो-चलो, रुको मत। सीधे कप्तान के पास चलो, और उसके कमरे में पहुंचते ही कहना, "बिल, तुम्हारा एक दोस्त आया है।" इतना कहकर उसने फिर मेरा हाथ मरोड़ा और कहा, "समझे ना? तुम्हारी भलाई इसीमें है कि चुपचाप मेरा कहना मान लो।"

मैं कप्तान से बहुत डरता था। लेकिन इस अजीब-से अन्धे

के सामने उसका डर मेरे मन से निकल गया। मैं अब घबरा रहा था कि कैसे इस डरावने भिखारी से मेरी जान बचेगी। वह बार-बार मेरा हाथ मरोड़ता था और मुझे आगे धकेलता था। अन्त में मैं उसे विल के कमरे में ले गया। कप्तान एक कोने में शराब के नशे में चुपचाप पड़ा था। मैंने उसे पुकारकर कहा, "विल, तुम्हारा एक दोस्त आया है।"

यह सुनते ही कप्तान का नशा उड़ गया। अब वह चौंककर उठने की कोशिश करने लगा, लेकिन वह इतना घबरा गया था कि उससे उठते भी नहीं बन रहा था। इतने में अन्धा बोला, "खबरदार, विल! उठने की ज़रूरत नहीं है। वहीं बैठे रहो। मेरी आंखें नहीं हैं, फिर भी मेरे कान इतने तेज़ हैं कि सब कुछ जान लेता हूं। अगर तुम वहां से ज़रा भी हिले-डुले तो ठीक नहीं होगा। लाओ, अपना दाहिना हाथ आगे बढ़ाओ।" फिर वह मुझसे बोला, "अरे लड़के, ज़रा इसका हाथ मेरे हाथ में तो दे-दे।"

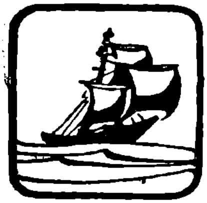
कप्तान ने अपना हाथ बढ़ा दिया। मैंने कप्तान का हाथ उसके हाथ में पकड़ा दिया। पलक मारते ही अन्धे ने एक कागज़ कप्तान की मुट्ठी में रख दिया और कहा, "बस, हो गया।" इतना कहकर वह मेरा हाथ छोड़कर, फौरन कमरे के बाहर हो गया और दौड़ता हुआ सराय से निकल गया। वह अन्धा था, लेकिन उसकी याददाश्त इतनी अच्छी थी कि जब वह एक बार किसी रास्ते से गुज़रता था, तो उसे रास्ते की पहचान हो जाती थी और फिर वह दौड़ते हुए उधर से निकल सकता था। सड़क पर उसकी लाठी की 'खट्-खट्' कुछ देर तक सुनाई देती रही।

कुछ देर तक हम दोनों चुप रहे। मैंने घबराहट में कप्तान का हाथ पकड़ रखा था। ज्योंही मैंने उसका हाथ छोड़ा, उसने कागज़ खोलकर उसकी तरफ देखा और कहा, "दस बजे! खैर, अभी छः घण्टे की देर है। मैं उससे निबट लूंगा।"

यह कहकर वह उछलकर खड़ा हो गया। लेकिन वह बीमारी के कारण इतना कमज़ोर हो गया था कि लड़खड़ाकर फिर से

बैठने की कोशिश करने लगा। लेकिन बैठ नहीं सका। अजीब तरह से कराहते हुए वह मुंह के बल ज़मीन पर गिर पड़ा। मैं चिल्लाकर उसके पास पहुंचा। लेकिन सब बेकार! पत्थर के फर्श पर गिरने से उसका सिर फट गया था और वह बेहोश हो गया था।

मैं अपनी मां को बुला लाया। उसने देखकर बताया कि कप्तान अब कभी होश में नहीं आएगा, वह मर चुका है। मैं कप्तान से बहुत घबराता था, लेकिन फिर भी उसके मर जाने से मुझे बहुत दुःख हुआ और मैं रोने लगा।



4

कप्तान के मरने के बाद मैंने अपनी मां को सारा किस्सा कह सुनाया। मैंने उसे यह भी बताया कि उस अन्धे के आने से पहले किस तरह कप्तान 'काला निशान' की बात कह रहा था। वह डाक्टर से कुछ कहना चाहता था और एक लंगड़े खलासी का उसे बहुत डर था।

मैंने मां को यह सब इसलिए बताया कि मुझे डर था कि वह अन्धा आदमी अपने साथियों को लेकर हमें लूटने के लिए आ पहुंचेगा। कप्तान पर हमारे बहुत-से रुपये बाकी थे। लेकिन अब उनका मिलना मुश्किल था। अचानक मैंने सोचा कि कप्तान का सन्दूक क्यों न तोड़ डाला जाए ? हो सकता है, उसमें रुपये हों। लेकिन सन्दूक तोड़ने में देर लग सकती थी और मैं अपनी मां को वहां से लेकर फौरन भाग जाना चाहता था। कप्तान के कमरे में उसका शरीर पड़ा था। मैं बहुत डर रहा था।

हो सकता है वह लंगड़ा अपने साथियों के साथ हमें लूटने के लिए आ ही रहा हो। इसलिए हम लोगों ने पास के गांव वालों से मदद लेने का निश्चय किया।

मां के साथ मैं घर से बाहर निकला और फिर हम लोग मौका पाकर दौड़ने लगे। थोड़ी ही देर बाद हम पास के गांव में जा पहुंचे। हमने वहां के लोगों को सारी बातें बताकर उनसे मदद मांगी। हमने उनसे कहा, "सब लोग मिलकर हमारी मदद करो। हमारी सराय की रक्षा का इन्तज़ाम करो, और कप्तान का सन्दूक तोड़कर उसमें से रुपया निकाल लो।" लेकिन एक आदमी भी इस काम में साथ देने को तैयार नहीं हुआ।

वे सब कप्तान फ्लिट को जानते थे। उसका नाम सुनते ही वे कांपने लगे। कोई भी हमारे साथ सराय तक जाने को तैयार नहीं था। उनमें से कुछ लोग सिर्फ डाक्टर के मकान तक जाने को तैयार थे। उनकी यह कायरता देखकर मेरी मां बोली, "यह बिना बाप का लड़का है और तुम लोग इसकी मदद नहीं कर सकते! धिक्कार है तुम्हें। लेकिन मैं इसके बाकी रुपये इसे दिलवाऊंगी। मैं खुद सन्दूक खोलूंगी। मुझे मरने का डर नहीं है।"

एक आदमी को डाक्टर लिवेसे को खबर देने के लिए भेजकर मां के साथ मैं लौट आया। मैंने गांव के एक जान-पहचान के आदमी से एक भरी हुई बन्दूक ले ली, ताकि अगर मरना ही पड़ा तो किसीको मारकर मरूंगा। फिर हम लोग उधर-उधर छिपते हुए सराय के पास आ पहुंचे। रात हो आई थी। चारों तरफ चांदनी छिटकी हुई थी। लेकिन उस समय रास्ते पर कोई नहीं दिखाई दे रहा था।

हम लोग दोनों अन्दर घुसे। अन्दर भी बिलकुल अंधेरा था। कप्तान के कमरे में उसकी लाश पड़ी थी। ऐसे में अन्दर जाते हुए, बड़ा डर लग रहा था। मां ने मोमबत्ती जलाई और कहा, "बेटा, सराय के सारे दरवाज़े और खिड़कियां बन्द कर दो और

फिर सन्दूक की चाबी खोज निकालो !"

दरवाज़े और खिड़कियां बन्द करने के बाद मैं कप्तान की जेब टटोलने लगा। पहले मैंने उसके हाथ से वह कागज़ निकाल कर देखा। कागज़ एक तरफ सफेद और दूसरी तरफ काला था। जिस तरफ वह सफेद था, उसपर लिखा था—'आज रात को दस बजे !' कागज़ अलग फेंककर मैंने कप्तान की जेबों में हाथ डाला। उसकी जेबों से सोने की कई मोहरें, कुछ तागे, एक कुतुबनुमा और एक छोटी-सी डिब्बी निकली। लेकिन सन्दूक की चाबी नहीं मिली।

मां ने कहा, "इसके गले में देखो, शायद बंधी हो।"

उसका गला टटोलने पर मुझे चाबी मिल गई। वह एक डोरे में बंधी हुई थी। चाबी पाकर मैं बहुत खुश हुआ। फिर हम लोग उस सन्दूक के पास पहुंचे। उस सन्दूक पर कई जगहों के नाम लिखे हुए थे। शायद वह कई देशों में घूम चुका था। वह बहुत मज़बूत लोहे का बना था, लेकिन काफी पुराना हो चुका था।

उसका ताला बहुत पुराना था और उसपर ज़ंग चढ़ आया था। बड़ी मुश्किल से ताला खुला। ढक्कन खुलते ही उसमें से तम्बाकू की बड़ी तेज़ गन्ध आने लगी। अन्दर एक जोड़ा कपड़े रखे थे। उनके नीचे कई तरह की चीज़ें पड़ी थीं। उसमें तम्बाकू के कुछ सूखे पत्ते थे, दो सुन्दर रिवाल्वर थे, चांदी का एक बड़ा-सा टुकड़ा था, कुछ सोने के गहने थे और स्पेन की पुरानी घड़ी थी। इसके नीचे जहाज़ियों के पहनने लायक एक पोशाक थी, जिसमें कागज़ का एक बण्डल था। शायद उसपर नक्शा बना हुआ था। इस पोशाक की जेब में सोने की बहुत-सी मोहरें थीं।

मेरी मां ने कहा, "यह कोई बदमाश और लुटेरा आदमी था। लेकिन हम लोग लूट का माल नहीं छुएंगे। मैं गिनकर इसमें से अपने बाकी रुपये निकाल लूंगी, और सब छोड़ दूंगी।"

मां को हिसाब लगाने में कुछ देर लगी, क्योंकि सन्दूक में



कई देशों के सिक्के थे। इतने में मुझे 'ठक्-ठक्' की आवाज़ सुनाई दी। मैंने मां से कहा, "बस, अव इसे यहीं रहने दो और भागने की तैयारी करो। शायद वह अन्धा आ पहुंचा है।" दरवाज़े पर बरावर लकड़ी पटकने की आवाज़ आ रहो थी। मैं डरकर खड़ा हो गया। अन्धे ने दो-तीन बार दरवाज़े पर

अपनी लकड़ी से चोट की। ऐसा लगा जैसे वह दरवाजा तोड़ डालेगा। लेकिन फिर उसकी 'ठक्-ठक्' की आवाज़ धीमी होती गई। शायद वह लौट गया। उसके चले जाने पर हम लोगों ने राहत की सांस ली।

मैंने मां से कहा, "मां, अब यहां एक पल रहना भी ठीक नहीं। चलो, इस कप्तान का धन लेकर हम लोग भाग निकलें। सराय के दरवाज़े मज़बूत नहीं हैं। फिर हम लोग यहां अकेले हैं।"

मां बोली, "हां, चलो, लेकिन हम उतने ही रुपये लेंगे जितने कि इस कप्तान पर हमारे बाकी थे। ज्यादा नहीं लेंगे।"

मैंने मां को बहुत समझाने की कोशिश की, लेकिन मां नहीं मानी। अभी तक उसका हिसाब पूरा नहीं हो पाया था। देश-देश के सिक्कों को लेकर वह कुछ हिसाब लगा रही थी। अन्त में बोली, "हिसाब पूरा होना मुश्किल है, चलो चलें।"

इतने में कुछ दूरी पर एक सीटी की दबी हुई आवाज़ सुनाई दी। हम दोनों फौरन नीचे उतर आए और धीरे से दरवाज़ा खोलकर बाहर निकल गए। मेरे हाथ में कप्तान का झोला था, जिसमें कुछ चीज़ें थीं। हम लोग तेज़ी से दौड़ रहे थे। इतने में हमने देखा कि कुछ लोग सराय की ओर बढ़े जा रहे हैं। अचानक उनमें से एक आदमी हाथ में मशाल लेकर हमारा पीछा करने लगा। कुछ ही देर में वह बहुत पास आ गया। उसके पीछे-पीछे और बहुत-से लोग आ रहे थे। घबराहट के मारे हम लोगों का बुरा हाल था। इतने लोगों को पीछे आते देखकर मां डर गई और कहने लगी, "बेटा, यह झोला लेकर तुम यहां से भाग निकलो। मुझसे तो अब दौड़ते नहीं बनेगा। जाओ, अब मेरी चिन्ता मत करो।"

मैं घबरा गया। इतने लोगों के बीच से भाग निकलना आसान नहीं था। इसलिए मैं मां को लेकर एक झाड़ी के पीछे छिप गया। झाड़ी के पीछे से ही हम लोग उनकी बातचीत सुनने लगे।



5

कुछ देर में सात-आठ आदमी दौड़ते-दौड़ते हमारी झाड़ी के पास आ गए। जब वे लोग करीब आ गए, तो मैंने देखा कि उनमें से तीन आदमी एक-दूसरे के हाथ पकड़कर दौड़ रहे थे। आवाज़ से मैंने फौरन पहचान लिया कि बीचवाला आदमी वही अन्धा था। सराय के पास आकर उस अन्धे ने अपने साथियों से कहा, "सराय का एक दरवाज़ा तोड़ डालो।"

दो-एक आदमी दरवाज़े की तरफ दौड़े लेकिन सराय का दरवाज़ा खुला हुआ पाकर वे वहीं खड़े रह गए और दबी आवाज़ में चुपचाप बातें करने लगे। अन्धा बहुत नाराज़ था। वह अपने साथियों को डांट रहा था, "तुम लोगों ने देर करके बड़ी गड़बड़ की। सारा माल हाथ से निकल गया। जाओ, अब अन्दर जाकर देखो, शायद कुछ मिल जाए।"

चार-पांच आदमी अन्दर घुसे और दो आदमी उस अन्धे के पास खड़े रहे। जो लोग अन्दर गए थे, उन्होंने चिल्लाकर कहा, "अरे, बिल तो मर गया।"

अन्धे ने बाहर से ही हुक्म दिया, "उसकी तलाशी लो और लोहे का सन्दूक उठा लाओ।"

वे लोग ऊपर गए। एक आदमी ने कप्तान के कमरे में पहुंचकर खिड़की खोली और ऊपर से ही बतलाया, "लगता है, किसीने सन्दूक खोल लिया है, लेकिन इसमें मोहरें अब भी रखी हुई हैं। कुछ गहने भी हैं।"

अन्धे ने कहा, "अरे मोहरों और गहनों को छोड़ो, वह नक्शा ले आओ। हमें फ्लिंट का नक्शा चाहिए।"

"लेकिन नक्शा तो सन्दूक में नहीं है।"

"नक्शा नहीं है ? लगता है, यह उसी छोकरे की शरारत है। अभी थोड़ी देर पहले वे लोग यहां आए थे। जब मैं आया था तो यह दरवाज़ा बन्द था। मैंने दरवाज़ा खोलने की कोशिश की, लेकिन दरवाज़ा नहीं खुल सका। अब तुम लोग ज़रा इधर-उधर खोजो। किसी तरह उस लड़के को पकड़ना पड़ेगा। और देखो, मकान तोड़कर उसमें आग लगा दो।"

अन्धे का हुक्म पाकर कुछ लोग आस-पास हमें ढूंढ़ने लगे। और कुछ मकान की चीज़ों को तोड़ने-फोड़ने लगे। फिर उन्होंने मकान में आग लगा दी।

इतने में झाड़ी के पास ही हमें सीटी की आवाज़ सुनाई दी। हम दोनों फिर से भागने लगे। हमें लगा कि यह सीटी उस अन्धे ने ही अपने आदमियों को इकट्ठा करने के लिए बजाई होगी, लेकिन बाद में पता चला कि यह सीटी अन्धे और उसके-आदमियों में से किसीने नहीं, बल्कि दूसरे किसी आदमी ने बजाई थी। उनमें से एक आदमी घबराकर बोला, "होशियार ! यह तो डार्क की सीटी मालूम होती है। यह दूसरी मुसीबत आई। भागो !"

यह सुनकर अन्धा उसे डांटने लगा, "भागना चाहते हो, कायर कहीं के ! अरे तुम लोग डार्क से इस तरह डरते क्यों हो ? वह कर क्या लेगा ? वह तो निरा कायर है ! तुम ज़रा उस लड़के और उसकी मां को ढूंढ़ने की कोशिश करो। वे लोग यहीं कहीं छिपे होंगे। इतनी जल्दी जा नहीं सकते। ज़रा जल्दी करो !"

उसके साथी हमें ढूंढ़ने की कोशिश करने लगे, लेकिन उनके चेहरे से इतना साफ था कि वे लोग अब बुरी तरह घबरा रहे थे और भागने का मौका ढूंढ़ रहे थे। इतने में अन्धे ने उन्हें ललकारकर कहा, "घबराओ मत ! उन लोगों को ढूंढ़ निकालना बहुत ज़रूरी है। नक्शा उस लड़के के पास ही होगा। जैसे

भी हो नक्शा हमें हासिल करना ही पड़ेगा। नक्शा मिल जाए तो हमें बहुत सारा माल मिल सकता है। अगर मेरी आंखें होतीं तो अभी मैं उन्हें पकड़ लेता।" गुस्से में आकर उसने अपने एकाध साथी को मार भी दिया। वे लोग नाराज़ हो गए और उस पर टूट पड़े।

उन लोगों को आपस में लड़ते देखकर हमारी जान में जान आई। इतने में अचानक टीले की तरफ से घोड़ों के दौड़ने की आवाज़ आने लगी। साथ ही बन्दूक छूटने की भी आवाज़ आई। यह सुनकर लुटेरे भागने लगे। थोड़ी ही देर में अन्धा अकेला रह गया। वह भी घबराकर एक तरफ दौड़ा। लेकिन एक पत्थर से टकराकर गिर पड़ा और अपने साथियों को आवाज़ देने लगा, "ब्लैक डाग! जौनी! अरे कहां भाग गए तुम सब? क्या मुझ अन्धे को अकेला छोड़ जाओगे? कोई मेरा हाथ पकड़कर मुझे भी साथ ले चलो!"

इतने में कुछ घुड़सवार तेज़ी से घोड़े दौड़ाते हुए उधर से निकले। अंधेरे में वे यह नहीं देख सके कि वहां अन्धा ज़मीन पर गिरा हुआ था। वे उसके ऊपर से होकर निकल गए। अंधा एक चीख मारकर तड़पने लगा और फिर शान्त हो गया।

सबसे आगे वाला घुड़सवार थोड़ी देर में हमारे पास आ पहुंचा और कूदकर घोड़े से नीचे आ गया। हमने फौरन पहचान लिया, वह पुलिस का कप्तान मिस्टर डेन्स था। उसके पीछे पासवाले गांव का वह लड़का था, जिसे हमने डाक्टर के पास खबर देने के लिए भेजा था। साथ में और भी कई सिपाही थे। उनके साथ हम लोग फिर से लौटकर गांव में आए। मां बहुत डर गई थी। मां को गांव में एक जगह ठहराकर दारोगा के साथ मैं फिर से सराय की तरफ लौटा। सराय जल रही थी। लुटेरे कप्तान का धन लेकर भाग निकले थे। दारोगा बोला, "जिम, ये लोग तो रुपये लेकर भाग निकले। लेकिन हां, तुम क्या कह रहे थे? वे लोग क्या ढूंढ़ रहे थे?"

मैंने कहा, "रुपये तो वे लोग ले गए, लेकिन जिस चीज़ को वे ढूंढ़ रहे थे वह मेरे पास ही है। उसे मैं किसी ऐसे आदमी के हाथ सौंपना चाहता हूं, जो उसे संभालकर रखे।"

पहले तो दारोगा चाहता था कि वह नक्शा मैं उसे ही दे दूं, लेकिन फिर मेरे कहने पर वह डाक्टर को देने के लिए राज़ी हो गया और बोला, "हां, हां ठीक है, डाक्टर को दे दो। वे गांव के मजिस्ट्रेट भी हैं। उनके पास यह चीज़ हिफाज़त से रहेगी। मैं उनको अन्धे के मरने की खबर दे आऊं। मैंने जान-बूझकर अन्धे को मारा नहीं। वह अचानक घोड़े के नीचे आ गया। लेकिन डाक्टर मेरी बात पर विश्वास नहीं करेगा। तुम भी मेरे साथ-साथ डाक्टर के पास चलो ना!"

मैं एक सिपाही के घोड़े पर बैठकर दारोगा के साथ डाक्टर से मिलने चल पड़ा। डाक्टर के यहां जाने पर मालूम हुआ, वे कहीं बाहर गए है। वे उस दिन लौटने वाले नहीं थे। पास के गांव के एक आदमी ने उन्हें बुलाया था। पता लगाकर हम भी वहां जा पहुंचे। हमें देखकर डाक्टर साहब बोले, "आओ! अन्दर चले आओ। इस तरह अचानक कैसे आना हुआ?"

दारोगा एक सांस में ही सारा किस्सा बता गया। सब कुछ सुनकर उन्होंने कहा, "इन दोनों मां-बेटों ने बड़ी हिम्मत से काम लिया। अच्छा जिम, जिस चीज़ को लुटेरे खोज रहे थे, वह तुम्हारे पास ही है ना? देखें, दो तो।"

मैंने गोल लपेटा हुआ कागज़ डाक्टर के हाथ में रख दिया। डाक्टर ने कागज़ देखकर अपने मित्र से पूछा, "ट्रिलोनी, तुमने फ्लिट का नाम सुना है?"

ट्रिलोनी इस गांव का एक अमीर था और डाक्टर का मित्र था। डाक्टर उसके यहां दावत खाने आया था। वह बोला, "हां-हां, क्यों नहीं। उसका नाम सुनकर तो बड़े-बड़े बहादुर कांपने लगते हैं।"

डाक्टर ने कहा, "मैंने भी उसका नाम कहीं सुना है। लोगों

का कहना है कि उसके पास बहुत-से हीरे-जवाहरात हैं। शायद उसका धन लूटने के लिए ही लुटेरे यहां आए हैं। देखें, इस नक्शे से क्या पता चलता है! मुझे तो लगता है कि इस नक्शे से उस जगह तक पहुंचा जा सकता है, जहां फ्लिट का खज़ाना छिपा हुआ है।"

नक्शे के साथ-साथ, दो चीज़ें और थीं—एक छोटी-सी डायरी और एक कागज़, जिसके ऊपर मोहर लगी हुई थी।

डायरी में बहुत घसीटकर लिखे गए अक्षरों में कुछ लिखा हुआ था। कई जगह कुछ निशान भी बने हुए थे, जिन्हें समझना मुश्किल था। शायद वह फ्लिट के हिसाब-किताब की डायरी थी। वह नक्शा एक टापू का मालूम होता था, जो शायद नौ मील लम्बा और पांच मील चौड़ा था। उस नक्शे में कई पहाड़ और छोटे-बड़े सागरों के नाम लिखे थे। टापू तक पहुंचने का रास्ता भी दिखाया गया था। टापू के दोनों ओर दो बन्दरगाह थे। बीच में एक बहुत बड़ा पहाड़ था, जिसका नाम शायद 'स्पाई-ग्लास' था। इस पहाड़ के ऊपरी भाग में लाल स्याही से तीर की तरह तीन निशान बने हुए थे। उनमें से एक निशान के पास बहुत बारीक अक्षरों में लिखा था : 'छिपा हुआ खज़ाना'। पास ही लिखा था, 'पहाड़ के ऊपर वाले सबसे बड़े पेड़ के पास'।

नक्शा पाकर हम लोग बड़े खुश हुए। ट्रिलोनी बोला, "लिवेसे! तुम अब डाक्टरी का पेशा छोड़ दो। इसमें तुम्हें आमदनी ही कितनी होती है! कल ही मैं ब्रिस्टल शहर जाऊंगा। मुझे आशा है कि एक महीने के अन्दर ही मैं अच्छा-सा जहाज़ और कुछ चुने हुए खलासियों को ला सकूंगा। जिम को हम लोग साथ ले चलेंगे। तुम जहाज़ के डाक्टर रहोगे और मैं उसका कप्तान रहूंगा। अब देरी करना ठीक नहीं। जैसे भी हो, हम लोगों को उस टापू का पता लगाना ही चाहिए।"

डाक्टर ने कहा, "हां, यह तो ठीक है, लेकिन मुझे तुमसे बड़ा डर रहता है। तुम किसी बात को गुप्त नहीं रख पाते। तुम्हारे

पेट में बात पचती ही नहीं। तुम ज़रूर इधर-उधर कुछ न कुछ कर दोगे और उससे हम संकट में फंस जाएंगे। वे लुटेरे भी चुप नहीं बैठे रहेंगे। किसी न किसी तरह तुम्हारी बात से उन्हें खबर लग सकती है। इसलिए तुम्हें एक वादा करना पड़ेगा कि तुम इस सिलसिले में कभी कुछ न कहोगे। अपने साथ तुम दो आदमियों को भी ले जाओ। अकेले जाना ठीक नहीं रहेगा।"



6

कुछ दिनों बाद ब्रिस्ट्रल से ट्रिलोनी का एक पत्र आया। उसने लिखा था, "मैंने अपने एक मित्र की सहायता से यहां एक छोटा जहाज़ खरीद लिया है। जहाज़ का नाम है: हिसपेनिओला। यह बहुत ही हल्का जहाज है और बहुत आसानी से चलता है। इसे मैंने यात्रा के लिए तैयार करा लिया है। मुझे अपने साथ ले जाने के लिए कुछ आदमियों की ज़रूरत थी। अचानक एक दिन एक बूढ़े खलासी से जान-पहचान हो गई। वह एक पैर से लंगड़ा है। मैंने उसे जहाज़ में रसोई बनाने के लिए रख लिया है। वह बहुत ही हिम्मतवार मालूम हुआ। वह पुराना जहाजी था। उसका नाम है—लांग जॉन सिलवर।

"सिलवर की मदद से मैंने कुछ ही दिनों में कुछ खलासी और इकट्ठे कर लिए, जो कई साल तक जहाज़ों पर काम कर चुके हैं। कठिन से कठिन यात्रा का इन लोगों को अनुभव है। जल्दी ही मैं लौट आऊंगा और फिर हम लोग उस अजनबी टापू की खोज में निकल पड़ेंगे, जहां खज़ाना छिपा हुआ है। जिम से कह



देना कि वह भी अपनी मां से पूछकर यात्रा के लिए तैयार रहे।"

उसकी चिट्ठी पाकर हम लोग बहुत खुश हुए। ट्रिलोनी के लौटने का इन्तज़ार करने के बजाए हम लोग खुद ब्रिस्टल जा पहुंचे। ट्रिलोनी हमें देखकर बहुत खुश हुआ और बोला, "वाह, तुम दोनों आ पहुंचे! चलो ठीक है, सारी तैयारी हो चुकी है। कल सवेरे ही हम लोग यात्रा शुरू कर दें तो ज्यादा अच्छा हो।"

दूसरे दिन सवेरे खाना खाने के बाद ट्रिलोनी ने मुझे एक कागज़ देकर कहा, "लो, यह कागज़ सिलवर को दे आओ। फौरन जाओ। तुम उसे आसानी से पहचान लोगे। इस सड़क से सीधे चले जाओ। आगे जाने पर तुम्हें एक सराय मिलेगी, जिसके दरवाज़े पर दूरबीन का चित्र बना होगा। वहां जाकर तुम उसका नाम लेकर पूछना।"

मैं वहां जा पहुंचा। अन्दर जाकर मैंने देखा कि वहां बहुत-से लोग बैठे थे, और ज़ोर-ज़ोर से बातें कर रहे थे। सब चुरुट पी रहे थे, जिससे कमरा धुएं से भर गया था। अन्दर घुसते ही मेरी नज़र एक आदमी पर पड़ी और मैंने पहचान लिया कि यही सिलवर है, क्योंकि उसका एक पैर घुटने के नीचे से कटा हुआ था। वह एक बैसाखी के सहारे चलता था। लंगड़ा होने पर भी वह बहुत तगड़ा और ताकतवर मालूम होता था। शायद यह वही लंगड़ा आदमी था, जिसे खोजने के लिए मुझे कप्तान ने एक बार तैनात कर रखा था।

उसे देखकर मैं कुछ घबराया, लेकिन फिर किसी तरह हिम्मत करके उसके पास पहुंचा और पूछने लगा, "क्या तुम्हारा ही नाम जॉन सिलवर है?"

"हां भाई, मैं ही सिलवर हूं। तुम कौन हो? कहां से आ रहे हो?"

मैंने कागज़ उसके हाथ में दे दिया। उसे पढ़कर वह बोला, "ओह, तुम्हारा ही नाम जिम है! चलो, यह अच्छा हुआ।" यह कहकर सिलवर ने मुझे प्यार से थपथपाया। इतने में एक

आदमी हमारे पास से निकला। देखकर मैं चौंक पड़ा। उसके हाथ की उंगलियां कटी हुई थीं। उसे देखकर मैं समझ गया कि यही ब्लैक डाग है। मैंने फौरन कहा, "अरे, यह तो ब्लैक डाग है! कहां चला गया था यह?"

मेरे मुंह से ब्लैक डाग का नाम सुनकर सिलवर चकित रह गया। उसने पूछा, "तुम ब्लैक डाग को कैसे जानते हो?"

मैंने कहा, "वाह, भला मैं इसे नहीं जानूंगा! मैंने इसे अपनी सराय में देखा था। मैं उस अंधे को भी जानता हूं। ये सब समुद्री डाकू हैं। क्या ट्रिलोनी ने इन सब लोगों के बारे में तुम्हें नहीं बताया?"

तभी मैंने देखा कि वहां जो लोग बैठे थे वे मेरी बातें सुनकर चौकन्ने हो गए और एक-एक करके खिसक गए। यह देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। थोड़ी देर में सिलवर कपड़े बदलकर आया और मेरे साथ चल दिया। वह रास्ते-भर मुझसे बातें करता रहा। उसकी बातों से मुझे लगा कि उसने कई देशों की यात्रा की है और उसने पूरी ज़िन्दगी जहाज़ों पर ही गुज़ारी है।

जब हम ट्रिलोनी के पास पहुंचे तो वह यात्रा की पूरी तैयारी कर चुका था। हमें देखकर बोला, "चलो, सीधे जहाज़ की ओर चलो। अब हमें यात्रा शुरू कर देनी चाहिए।"

हम लोग बन्दरगाह में पहुंचे और अपने छोटे से जहाज़ में चढ़ गए। वहां ऐरो नाम के एक बूढ़े खलासी ने हमारा स्वागत किया। वह बड़ा अनुभवी जहाजी था। काफी बूढ़ा हो गया था, लेकिन फिर भी जहाज़ में घूमने-फिरने का शौक कम नहीं हुआ था। उसने अपने कान में पीतल की बालियां पहन रखी थीं। ट्रिलोनी उसे बहुत चाहता था।

जब हम लोग अन्दर पहुंचे तो जहाज़ का कप्तान स्मोलेट अन्दर आया और ट्रिलोनी से बोला, "साहब, आपको मेरी बात बुरी लगे या भली, लेकिन मैं यह बता देना चाहता हूं कि मुझे ये आपके खलासी लोग बिलकुल पसन्द नहीं हैं।"

उसकी बात सुनकर ट्रिलोनी को गुस्सा आ गया। वह बोला, "यह तुम क्या कह रहे हो ? तुम्हें तो शायद जहाज़ भी पसन्द नहीं होगा। और शायद मैं भी पसन्द नहीं हूं, जिसने जहाज़ खरीदकर तुम्हें इसका कप्तान बनाया है।"

लेकिन डाक्टर लिवेसे ने बीच में ही बोलते हुए कहा, "इस तरह झगड़ने से कोई फायदा नहीं होगा। ज़रा इससे पूछो तो कि जहाज के खलासी इसे पसन्द क्यों नहीं हैं।"

कप्तान बोला, "सिर्फ खलासी ही नहीं, मुझे यहां की हर चीज़ नापसन्द है। शुरू में मुझसे यह कहा गया था कि ट्रिलोनी साहब जिस तरह कहें, मुझे जहाज़ चलाना पड़ेगा और जहां चाहें ले जाना पड़ेगा। मैं राज़ी हो गया। लेकिन यहां आने पर मैंने देखा कि इस जहाज़ के खलासी बहुत कुछ जानते हैं। उन्हें सब मालूम है कि जहाज़ कहां जा रहा है और किसलिए जा रहा है। लेकिन मैं कुछ नहीं जानता। मैंने सुना है कि आप लोग कोई छिपा हुआ खज़ाना खोजने जा रहे हैं। खज़ाना खोजना कोई आसान काम नहीं है। लेकिन सबसे आश्चर्य की बात तो यह है कि यह सब इस जहाज़ के नौकरों को मालूम है। लेकिन फिर भी कोई कुछ बताता नहीं है। आप जानते नहीं कि कितना खतरा आप लोग मोल ले रहे हैं!"

यह सुनकर डाक्टर लिवेसे ने कहा, "खतरा मोल लेने के लिए तो हम लोग निकले ही हैं। लेकिन खलासियों से तुम्हें क्या शिकायत है ? क्या वे लोग अपना काम नहीं जानते ?"

"उनके खिलाफ मुझे कोई खास शिकायत नहीं है, लेकिन उनका चौधरी ऐरो मुझे अच्छा आदमी नहीं मालूम होता। जहाज के काम में वह पूरा उस्ताद है, लेकिन खलासियों के साथ वह जिस तरह घुल-मिलकर रहता है और हंसी-मज़ाक किया करता है, वह मुझे बड़ा अजीब मालूम होता है। मुझे लगता है कि आपने इन्हीं लोगों के साथ यात्रा करने का निश्चय कर लिया है। खैर, आप जानिए। लेकिन जहाज़ के केबिन में हथियार और

गोला-बारूद रखने की जगह होने पर भी उन्होंने सारा हथियार-खाना बाहर क्यों इकट्ठा कर रखा है ? इसके अलावा वे लोग उस खज़ाने के बारे में तरह-तरह की बातें करते हैं। मुझे तो कुछ मालूम नहीं, लेकिन उन्हींकी बात से पता चलता है कि आप लोगों के पास किसी टापू का नक्शा है, जहां खज़ाना छिपा है।"

इसपर ट्रिलोनी नाराज़ होकर बोला, "इस बात को मैंने गुप्त रखने को कहा था। क्यों डाक्टर, यह सब उन लोगों को किसने बतलाया ?"

कप्तान बोला, "किसीने बतलाया हो, लेकिन यह ठीक नहीं हुआ। आप लोगों को कम से कम इतना तो गुप्त रखना चाहिए ही था। खैर, इतना ठीक है कि अभी किसीको यह नहीं मालूम है कि नक्शा किसके पास है।"

डाक्टर ने कहा, "तुम्हारा मतलब यह है कि हमें सारी बात छिपा देनी चाहिए और जहाज़ पर एक हथियारबंद टुकड़ी तैयार रखनी चाहिए ताकि अगर जहाज़ पर झगड़ा हो तो वह हमारी मदद कर सके ?"

"जी हां ! आपको किसी बात के लिए मजबूर करने का मुझे अधिकार नहीं है। लेकिन चूंकि मैं जहाज़ का कप्तान हूं, इसलिए हर आदमी की जीवन-रक्षा करने के लिए मैं ज़िम्मेदार हूं।" यह कहकर कप्तान वहां से चला गया। उसके जाने के बाद डाक्टर ने कहा, "ट्रिलोनी, जहाज़ पर दो आदमी ऐसे हैं, जिनपर हम भरोसा कर सकते हैं। एक तो यह कप्तान स्मोलेट और दूसरा जॉन सिलवर।"



7

कप्तान के कहने के अनुसार जहाज़ पर पूरा इन्तज़ाम कर लिया गया और हमारा जहाज़ छिपे हुए खज़ाने की खोज में चल पड़ा। जब जहाज़ ने बन्दरगाह छोड़ा तो हमारी खुशी की सीमा नहीं रही।

जहाज़ के रसोईघर का काम जॉन सिलवर पर छोड़ा गया। सब लोग सिलवर का बड़ा आदर करते थे। उसका स्वभाव ऐसा था कि हर आदमी उसे चाहने लगता था। मुझे वह बहुत अधिक पसन्द करता था। ट्रिलोनी और जहाज़ के कप्तान में अच्छी दोस्ती नहीं हो सकी। दोनों एक-दूसरे पर शक करते थे और एक-दूसरे से बचकर रहने की कोशिश करते थे।

जहाज़ आगे बढ़ता चला जाता था। यात्रा करते हुए हमें दो दिन पूरे हो चुके थे। हम लोग अजनबी टापू के करीब पहुंच रहे थे। बहुत मुमकिन था कि कल सुबह तक हमारा जहाज़ वहां पहुंच जाता। यह सोचकर हम लोग बहुत खुश थे। मैं तो मारे खुशी के कोई काम ही नहीं करता था। दिन-भर जहाज़ की खिड़की में बैठा रहता था ओर दूर क्षितिज की ओर देखता रहता था।

एक बार मैं जहाज़ का चक्कर लगाकर अपनी कोठरी में गया। अन्दर जाने पर मुझे लगा कि पासवाले कमरे में कुछ झगड़ा हो रहा है। मैंने सुना, सिलवर किसीसे कह रहा था, "नहीं, नहीं, मैं नहीं था। फ्लिंट ही उस जहाज़ का कप्तान था। मैं तो जहाज का एक मामूली खलासी था। उसी जहाज़ पर मेरा पैर कटा था और उस बुड्ढे ने अपनी आंखें खोई थीं।"

कोई दूसरा आदमी कह रहा था, "फ्लिट बहुत ही बहादुर आदमी था। उसके जैसा हिम्मतवाला आदमी मैंने आज तक नहीं देखा था।"

"हां, और डेविस भी बहुत बहादुर था।" सिलवर ने कहा, "मैंने दोनों के साथ काम किया है। दोनों के साथ मैं जहाज़ लूटने गया हूं। फ्लिट के पास बहुत धन था। उसने अपना सारा धन इधर-उधर अनजान टापुओं पर छिपा रखा था। हमारे जहाज़ पर कुछ लोग फ्लिट से डरते थे और कुछ उस अंधे बूढ़े से डरते थे। लेकिन मैं किसी से नहीं डरता था। उलटे वे दोनों मुझसे डरते थे।"

यह सब सुनकर मैं बहुत घबराया। साफ ज़ाहिर था कि ये सब पक्के जहाज़ी लुटेरे थे और अब तक न मालूम कितने जहाज़ लूट चुके थे और न मालूम कितने आदमियों की जान ले चुके थे। इतने में मैंने फिर से सिलवर को कहते सुना, "देखो, अपने इस जहाज़ का कप्तान बड़ा चालाक मालूम होता है। उसपर बराबर नज़र रखना और उससे बचकर ही रहना। फ्लिट का नक्शा या तो ट्रिलोनी के पास है या डाक्टर के पास। नक्शा तो हम लोगों को मिल नहीं सकता लेकिन टापू पर पहुंचने के बाद हमें पहले इन्हीं दोनों से निबटना होगा और इनसे छुट्टी पाने की कोशिश करनी होगी। लेकिन इससे पहले किसी न किसी तरह नक्शा हमारे हाथ में आ जाना चाहिए।" यह सब सुनकर मेरी छाती धड़कने लगी। मैं बुरी तरह घबरा गया था। ये लोग तो हमारी सारी मेहनत पर पानी फेरना चाहते थे। इन्होंने मौके पर हम लोगों को धोखा देने की तैयारी कर रखी थी। मैं इसी तरह सोच रहा था कि धीरे-धीरे शाम होने लगी और चांद निकल आया। मुझे मां की याद आने लगी। मुझे डर था कि कहीं इन लोगों के हाथ से बचकर निकलना असंभव न हो जाए और मुझे भी यहीं जहाज़ पर अपने प्राण गंवा देने पड़ें। इतने में कोई आदमी चीखा, "ज़मीन! ज़मीन दिखाई दे रही है!"

जहाज़ की डेक पर एकसाथ कई लोगों के दौड़ने-भागने की आवाज़ें आने लगीं। सब दूर से टापू को देखना चाहते थे। मैं भी निकलकर बाहर पहुंचा। वहां सब लोग इकट्ठे हो चुके थे। मैं डाक्टर के पास जा खड़ा हुआ। सामने एक पहाड़ दिखाई दे रहा था। उसके पीछे और दो-तीन पहाड़ थे। कोहरे की वजह से वे साफ-साफ दिखाई नहीं दे रहे थे। कप्तान ने अपने साथियों से पूछा, "क्या तुममें से किसीने पहले कभी इस टापू को देखा था ?"

सिलवर बोला, "जी हां, मैंने देखा है। मैं एक सौदागर के साथ उसके जहाज़ में वहां तक गया था। उस समय मैं उस जहाज़ पर रसोइये का काम कर रहा था।"

कप्तान के कहा "मुझे लगता है कि हमें दक्षिणी किनारे पर लंगर डालना पड़ेगा। शायद वहां भी कोई छोटा-सा टापू है। वहां हमारा जहाज़ हिफाज़त से रह सकेगा।

सिलवर कहने लगा, "जी हां, उस टापू का नाम स्केलेटन है। एक ज़माने में उस टापू पर समुद्री डाकुओं का अड्डा था। उधर जो पहाड़ दिखाई दे रहा है, उसका नाम फोर-मास्ट है। दक्षिण की तरफ भी एक के बाद एक तीन पहाड़ हैं। बीच का पहाड़ सबसे ऊंचा है। कभी-कभी उसकी चोटी बादलों में छिपी रहती है। उस पहाड़ का नाम स्पाईग्लास है।"

कप्तान बोला, "मेरे पास एक पुराना नक्शा पड़ा हुआ है। ज़रा मैं देखूं तो हम लोग ठीक जगह पहुंचे हैं या नहीं।"

ज्योंही कप्तान ने नक्शा निकाला, सिलवर और उसके साथियों की आंखें चमक उठीं। वे एकटक उसकी ओर देखने लगे। लेकिन यह वह नक्शा नहीं था जो कप्तान विल के सन्दूक में से निकला था। यह उस नक्शे की नकल थी। इसमें सब कुछ बना हुआ था, लेकिन वे लाल निशान नहीं बने हुए थे, जिनसे छिपे हुए खज़ाने का पता चलता था। सिलवर कुछ परेशान नज़र आया। उसने नक्शे को गौर से देखा और फिर

निराश होकर बोला, "हां, हम लोग ठीक जगह पहुंच गए हैं। हमने कोई भूल नहीं की।"

कप्तान ने कहा, "अच्छा ठीक है, अब तुम जाओ, अपना काम करो। जब ज़रूरत होगी तो मैं तुम्हें बुला लूंगा।"

सिलवर धीरे-धीरे वहां से खिसक आया। उसके साथी भी हट गए। फिर सिलवर मेरे पास आया। मैं कुछ घबरा गया। लेकिन उसे यह नहीं मालूम था कि मैंने छिपकर उसकी सारी बातें सुन ली थीं। मेरे पास आकर वह बोला, "जिम, यह टापू बहुत अच्छा है। तुम्हें यह बहुत पसन्द आएगा। यहां बच्चों के खेलने की खूब जगह है। तुम चाहो यो दिन-भर तैरते रहो या पेड़ों पर चढ़ते रहो। मैं तुम्हें अपनी बन्दूक दे दूंगा। जब तुम्हारी इच्छा हो, तुम शिकार करने निकल जाना। इस टापू को देखकर मुझे अपना बचपन याद आता है। यहां आकर मैं यह भी भूल जाता हूं कि मेरा एक पैर कट चुका है, मैं लंगड़ा हूं।"

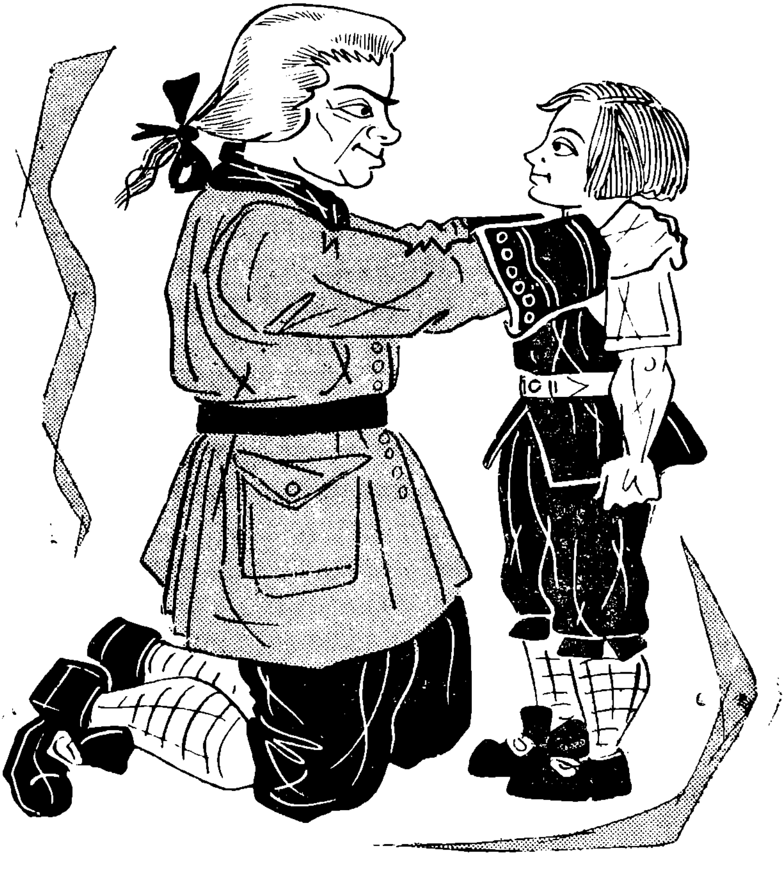
फिर मेरी पीठ थपथपाकर वह चला गया। मैं दौड़ता हुआ डाक्टर लिवेसे के पास पहुंचा। मैंने उससे सब कुछ बता दिया कि ये लोग कौन हैं और क्या चाहते हैं। लेकिन डाक्टर को मेरी बात पर विश्वास नहीं हुआ। वह कहने लगा, "अरे नहीं पगले ! तुम्हें भ्रम हो गया, सिलवर बहुत भला आदमी है।"

तभी कप्तान वहां आ पहुंचा और कहने लगा, "नहीं, ऐसी बात नहीं है। डाक्टर साहब, सिलवर को आप जानते नहीं। खैर, जाने दीजिए। आगे सब कुछ मालूम हो जाएगा। और अभी तो कोई डर नहीं है। जब तक खज़ाना हाथ में नहीं आ जाता, तब तक डरने की कोई बात नहीं। जब खज़ाना हाथ आ जाएगा तब एक छोटी-मोटी लड़ाई हम लोगों में ज़रूर होगी। बस तभी संभलकर रहने की ज़रूरत है। हम लोग सिर्फ चार आदमी हैं और ये लोग इतने सारे हैं। इतना याद रखना कि इनमें से कोई भी हमारा मित्र नहीं है।"

डाक्टर कहने लगे, "ठीक है, देखा जाएगा। लेकिन मुझे

लगता है कि जिम से हमारा बहुत काम निकलेगा क्योंकि इसे सब लोग चाहते हैं और इसके साथ खुलकर बातचीत करते हैं। फिर यह लड़का भी समझदार है। हम लोग इसपर भरोसा भी कर सकते हैं।"

डाक्टर की यह बात सुनकर मैं कुछ घबराया। मुझे लगा कि



सचमुच जहाज़ पर कोई लड़ाई होगी और मुझे भी उसमें भाग लेना पड़ेगा। हम लोगों की संख्या बहुत ही कम थी और वे लोग करीब-ग्यारह बारह आदमी थे। अगर लड़ाई हुई तो उसमें जीत पाना मुश्किल होगा।

8



हमारा जहाज़ टापू के समीप आने लगा। सब लोग अपना-अपना काम छोड़कर टापू की ओर देख रहे थे। कोई किसी का कहना मानने को तैयार नहीं था। कप्तान ने नक्शा देखकर लंगर डालने की जगह ढूंढ़ी और हमारे जहाज़ ने एक छोटे टापू के पास लंगर डाल दिया। बड़ा टापू कुछ ही कदम दूर था। कप्तान ने हम लोगों से कहा, "जाओ, तुम लोग टापू पर थोड़ी घूम-फिर आओ। बहुत दिनों बाद ज़मीन नज़र आई है। जब सूरज डूबने लगेगा तो मैं बन्दूक से आवाज़ करूंगा। तुम लोग वापस जहाज़ पर लौट आना।"

सिलवर ने अपने छः साथियों को जहाज़ पर छोड़ दिया और बाकी लोगों को साथ लेकर वह टापू पर घूमने निकला। मैंने भी सोचा कि मैं अगर इन लोगों के साथ घूम आऊं तो ज्यादा अच्छा रहेगा। जहाज़ किनारे से लगभग आधा मील दूर था। हम लोग तीन-चार छोटी-छोटी नावों में बैठकर किनारे की ओर चले। मैं जिस नाव में था वह काफी हल्की थी, इसलिए सबसे पहले किनारे लगी। किनारे पर पहुंचते ही मैं उछलता-कूदता आगे बढ़ गया और जंगल में घूमने लगा।

धीरे-धीरे मैं सिलवर और उसके साथियों से काफी दूर निकल गया। वे लोग बहुत पीछे थे और शायद यह भी भूल गए थे कि मैं उनके आगे-आगे दौड़ रहा हूं। उस टापू पर मुझे किसी आदमी के रहने का कोई निशान नहीं मिला। मैं और आगे बढ़ता चला गया जंगल में तरह-तरह के पेड़ थे। ऐसे अजीब-अजीब से पक्षी दिखाई दे रहे थे जैसे मैंने आज तक नहीं देखे थे।

मैं आगे चलता गया। इतने में अचानक सामने कहीं किसी आदमी के बोलने की आवाज़ आई। मैं कुछ चौंका और एक झाड़ी के पीछे छिप गया। मैंने देखा कि सिलवर अपनी टोली के एक आदमी से झगड़ रहा था। उस आदमी का नाम था टाम। मैंने सुना टाम दबी आवाज़ में, लेकिन दांत पीसते कह रहा था, "तुमने एलिन की हत्या की है, क्यों है ना ? सिलवर ! मैं बहुत दिनों तक तुम्हारे साथ दोस्ती निभाता रहा हूं। लेकिन याद रखो, आज से मैं तुम्हारा दोस्त नहीं हूं। सच बताओ, तुमने एलिन की हत्या की है ? तब तो इस तरह एक दिन मुझे भी मार डालोगे। खैर, कोई बात नहीं, मैं भी देख लूंगा।"

यह कहकर टाम जहाज़ की ओर लौटने लगा। इतने में मैंने देखा कि सिलवर ने एक पेड़ की डाली काटी और उसे छीलकर लाठी-सी बना ली। फिर उसने दौड़कर टाम की पीठ पर ज़ोर से वार किया। टाम चीखकर ज़मीन पर गिर पड़ा। इतने में पलक मारते ही सिलवर ने अपना छुरा निकाल लिया और टाम की छाती में भोंक दिया। टाम तड़पकर ठंडा हो गया।

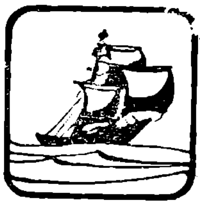
टाम को मारकर सिलवर बहुत ज़ोर से हंसा और फिर अपनी जेब में हाथ डालकर थोड़ी देर तक टाम की लाश को देखता रहा। फिर उसने जेब से एक सीटी निकालकर ज़ोर से फूंकी। इस सीटी का क्या मतलब है, यह मेरी समझ में नहीं आया। मुझे बहुत डर लगने लगा। मैं फौरन वहां से भाग निकला।

इतने में अचानक जहाज़ की ओर से कप्तान की बन्दूक की आवाज़ आई। मैंने जहाज़ की ओर लौट जाने का निश्चय

किया। मुझे अब सिलवर से डर लगने लगा था। मुझे मालूम हो ही चुका था कि एलिन की उसने हत्या की थी। और टाम को तो उसने मेरी आंखों के सामने ही मारा था। मुझे डर होने लगा कि कहीं किसी दिन यह मुझे भी न मार डाले। इसलिए मेरा मन कहता था कि अब जहाज़ पर लौटकर जाना बेकार है। इन लोगों के चंगुल से बचना वहां मुश्किल होगा।

मैं सोचने लगा कि क्यों न इसी जंगल में रहकर अपनी ज़िन्दगी काट दूं। जहाज़ पर जाकर इन खतरनाक लुटेरों के हाथ में पड़ने की बजाए इस टापू पर भटकते फिरना मुझे ज्यादा अच्छा लगा। यह सोचकर मैं मुड़ गया और जंगल में भागता चला गया। दौड़ते-दौड़ते कुछ देर बाद मैं पहाड़ के सामने जा पहुंचा। आस-पास खूब ऊंचे-ऊंचे पेड़ खड़े थे। वहां पहुंचकर मैं सुस्ताने लगा।

9



कुछ देर सुस्ताने के बाद मैं फिर उठकर आगे बढ़ने की तैयारी करने लगा। अचानक पहाड़ पर से एक बड़ा भारी पत्थर लुढ़कता हुआ नीचे आया। मैं चौंककर एक तरफ उछल गया। फिर मैंने ऊपर देखा तो मारे डर के मेरे प्राण सूख गए। मैंने देखा कि एक अजीब-सा जानवर उछलता-कूदता नीचे चला आ रहा है। उसे देखकर मेरे मुंह से चीख निकल गई।

लेकिन कुछ पास आने पर मैंने देखा, उसकी शक्ल-सूरत



आदमी से मिलती-जुलती थी। लेकिन वह आदमी नहीं था। देखने में रीछ या बन्दर जैसा मालूम पड़ता था। उसके पूरे शरीर पर लम्बे-लम्बे बाल थे। अब मैं अजीब हालत में फंसा। इधर सामने यह डरावना जानवर खड़ा है और उधर लौटकर जाता हूं तो सिलवर और उसके लुटेरे साथियों का डर है। लेकिन फिर भी मुझे इस अजीब-से जानवर की बजाय सिलवर से ज्यादा डर था। वह अजीब-सा जानवर कभी दो पैरों पर खड़ा होकर और कभी हाथ-पैर के बल दौड़ते हुए मेरी ओर आ रहा था। मेरे पास

एक छोटी बन्दूक थी। बन्दूक का ख्याल आते ही मैं फौरन बन्दूक तानकर खड़ा हो गया।

मुझे बन्दूक तानते देखकर वह प्राणी ज़मीन पर झुक गया और बहुत अजिज़ी से मुझे देखने लगा। उसकी आंखों से लगता था कि वह मुझसे दया की भीख मांग रहा था। मैंने उससे पूछा, "तुम कौन हो?"

उसने बहुत ही मोटी और डरावनी आवाज़ में जवाब दिया, "मेरा नाम बेनगन है। मैं तीन साल से इस टापू पर अकेला रहता हूं। तीन साल से मैने किसी आदमी का चेहरा नहीं देखा।"

मैं डरते-डरते उसके पास पहुंचा और गौर से उसे देखने लगा। असल में वह मेरी ही तरह एक आदमी था। और भालू के चमड़े की पोशाक पहने हुए था। इतने दिनों तक गर्मी और धूप में रहने के कारण उसका चेहरा काला पड़ गया था। मैंने उससे पूछा, "तीन साल से तुम इस टापू पर क्या कर रहे हो? क्या किसी जहाज़ के डूब जाने पर तुमने यहां शरण ले ली थी?"

वह बोला, "नहीं। असल में मुझे इस टापू पर ज़बरदस्ती छोड़ दिया गया था। किसी तरह तीन साल तक मैं यहां के फल-फूल और जंगली जानवरों का मांस खाकर ज़िन्दा रहा हूं। लेकिन अब मुझे ये सब चीज़ें अच्छी नहीं लगती हैं। कभी-कभी मुझे उस भोजन की याद आती है, जो मैं घर पर खाया करता था। क्या तुम्हारे पास बिस्कुट और केक वगैरह हैं?"

मैंने कहा, "नहीं, इस समय तो मेरे पास कुछ नहीं है। अगर मैं जहाज़ पर चला जाऊं तो वहां से तुम्हारे लिए खाने-पीने की चीज़ें ला सकता हूं।"

"लेकिन यह तो बताओ, तुम्हारा नाम क्या है?"

"जिम।"

"जिम! वाह, नाम तो तुम्हारा बड़ा अच्छा है। इतने सालों बाद आज मैं पहली बार तुम्हारे रूप में एक आदमी को देख रहा हूं।" यह कहकर बेनगन ने इधर-उधर नज़र दौड़ाई और फिर

धीरे से कहा, "जिम, मैं एक ज़माने में बहुत पैसे वाला था। मेरे पास बहुत बड़ा खज़ाना था।"

फिर उसने मेरा हाथ पकड़कर पूछा, "अच्छा, सच-सच बताना, तुम कहीं फ्लिट के जहाज के आदमी तो नहीं हो?"

"नहीं तो, और फ्लिट तो बहुत पहले ही मर चुका है। मैं उसके जहाज़ का आदमी नहीं हूं। लेकिन उसके दल के कुछ लोग मेरे जहाज़ पर भी हैं। वे लोग इस समय इसी टापू पर घूमने आए हैं।"

यह सुनकर बेनगन का चेहरा उतर गया। उसने बहुत घबराकर पूछा, "क्या उन लोगों में एक लंगड़ा आदमी भी है, जिसका नाम लांग जॉन सिलवर है? तुम उस आदमी को पहचानते हो?"

"कौन, सिलवर ना? हां, हां, मैं उसे जानता हूं। वह जहाज़ पर रसोइये का काम करता है और उन सब का सरदार मालूम पड़ता है।"

बेनगन ने अपना मुंह मेरे कान के पास लाकर कहा, "जिम, क्या तुम जानते हो कि इस समय तुम कहां आ पहुंचे हो? और यह बताओ कि तुम यहां तक कैसे पहुंचे?"

मैंने सोचा कि इस आदमी से कुछ छिपाकर रखना बेकार है। हो सकता है, यह मेरी मदद करने को तैयार हो जाए। इसलिए मैंने शुरू से लेकर अब तक की सारी घटनाएं कह सुनाईं। साथ ही मैंने उसे यह भी बताया कि उस जहाज़ में कितने आदमी हैं। वह बहुत ध्यान से मेरी बातें सुनता रहा। अन्त में बोला, "जिम, तुम तो बहुत भले लड़के मालूम पड़ते हो। लेकिन तुम्हारी बातों से लगता है कि तुम लोगों में आपस में भी झगड़ा है। लेकिन तुम मुझ पर विश्वास कर सकते हो। और अन्त में तुम्हें मालूम होगा कि मैं कितना सच्चा और ईमानदार आदमी हूं। मेरी बात सुनो। फ्लिट जब अपना खज़ाना लेकर यहां पहुंचा तब मैं उसके जहाज़ पर काम करता था। वे लोग छः खलासियों को साथ

लेकर इस टापू पर उतरे। बाकी हम लोग उसी जहाज़ पर रहे। सात दिन बाद हमने देखा कि फ्लिट अकेला ही नाव में बैठकर जहाज़ के पास आ पहुंचा। उसके साथ और कोई नहीं था। फ्लिट ने अपने साथ के सभी आदमियों को इसी टापू पर मार डाला। किस तरह उसने उन लोगों को मारा, यह कोई जान ही नहीं सका। वह अकेला छः आदमियों को किस तरह मार सका, यह बड़े आश्चर्य की बात थी।''

कुछ देर चुप रहकर बेनगन फिर बोला, ''जब वह जहाज़ पर आया तो बिल और सिलवर ने उससे पूछा, 'तुमने हीरे और मोतियों को किस जगह छिपाया है ?'

''फ्लिट ने जवाब दिया, 'अगर तुम देखना चाहते हो तो जाओ, टापू पर जाकर देखो। लेकिन मैं यहां से फौरन जाना चाहता हूं। मैं तुम्हारी किसीकी राह नहीं देखूंगा और जहाज़ ले जाऊंगा।'

''इसलिए हममें से कोई भी टापू पर नहीं जा सका। इसके बाद मैं कई बार इस टापू के पास से गुजरा और जब मैं इधर से किसी जहाज़ में निकलता था, तो अक्सर अपने साथियों से कहता था, 'देखो, यहीं फ्लिट का खज़ाना छिपा हुआ है। चलो हम लोग चलकर खोज निकालें।' लेकिन जहाज़ के कप्तान ने कभी मेरी बात पर ध्यान नहीं दिया। हां, एक बार मेरे सब साथियों ने मेरी बात मान ली और हम लोग इस टापू पर आ पहुंचे।

''करीब बारह दिन तक हम लोग इस टापू पर भटकते रहे, लेकिन हमें यह मालूम नहीं हो सका कि खज़ाना कहां छिपा पड़ा है। इतनी मेहनत के बाद भी जब कोई लाभ नहीं हुआ तो मेरे साथी चिढ़कर मुझसे ही झगड़ा करने लगे, क्योंकि मैं ही उन लोगों को यहां लाया था। गुस्से में आकर वे लोग मुझे अकेला ही इस टापू पर छोड़कर यहां से चले गए। जाते समय वे लोग मुझे एक बंदूक और एक कुदाली देते गए और कहते गए कि तुम यहां

रहकर खज़ाने का पता लगाना। हम लोग जा रहे हैं।

"तब से मैं इसी टापू पर पड़ा हूं। इस बात को करीब तीन साल हो गए। तीन साल से मैंने किसी आदमी की शक्ल नहीं देखी। यहां कोई रहता ही नहीं। बस, ये जंगल के पेड़-पौधे और जंगली जानवर हैं, और मैं हूं। तीन साल से मैंने इंसान के खाने लायक खाना नहीं खाया। जानवरों का शिकार करता हूं और उनका मांस खाता हूं। या फिर फल-फूल खा लेता हूं। आज मुझे देखकर भला कोई यह मान सकता है कि कभी मैं भी जहाज़ का खलासी था? अक्सर मुझे इस बीच अपना घर और अपनी मां की याद आती रही।" फिर हंसकर मेरा हाथ पकड़ते हुए उसने कहा, "बेटा, तुम अपने आदमियों को सारी बात बता देना। उनसे यह भी कह देना कि बेनगन बड़ा ईमानदार आदमी है। उसका विश्वास करें। उसके साथ रहने से उन लोगों को कोई दिक्कत नहीं होगी।"

लेकिन अब मैं जहाज़ की ओर लौटूं तो कैसे? मेरी समझ में नहीं आ रहा था। मैंने उससे कहा, "मेरे सारे साथी वापस लौट गए हैं। अब जहाज़ पर जाना मेरे लिए संभव नहीं है।"

वह बोला, "ठीक है। लेकिन तुम डरो मत। मेरे पास एक छोटी-सी नाव है। उसे मैंने छिपा रखा है। वह बहुत ही हल्की है। उसे मैंने खुद अपने हाथों से बनाया था। ज़रा और अंधेरा हो जाने दो तो हम लोग उसी में बैठकर जहाज़ पर चलेंगे।"

इसी बीच फिर जहाज़ पर से बन्दूक छूटने की आवाज़ आई। उसे सुनकर बेनगन चौंका और उसने कहा, "यह क्या? यह क्या हो रहा है?"

मैंने कहा, "लगता है वे लोग जहाज़ पर आपस में लड़ रहे हैं। आओ, तुम भी मेरे साथ-साथ चलो।"

मैं बेनगन को साथ लेकर जहाज़ की ओर चल पड़ा। अब मुझे किसी बात का डर नहीं था। बेनगन मुझे रास्ता बताता चलता था। रास्ते में वह अपने आप ही तरह-तरह की बातें

बताता रहा। हम लोग दौड़कर चल रहे थे। उधर जहाज़ से बराबर रह-रहकर बन्दूक चलने की आवाज़ आती थी। कुछ दूर जाने पर हमने देखा कि हमसे कोई पांच मील की दूरी पर एक पेड़ पर इंग्लैंड का झंडा 'यूनियन जैक' फहरा रहा था।

उस झण्डे को देखकर बेनगन खड़ा हो गया और झंडे की ओर इशारा करते हुए बोला, "वह झंडा देख रहे हो ना ? हो सकता है, वहीं तुम्हारे साथी ठहरे हों।"

मैंने कहा, "वे मेरे साथी हैं या शत्रु, यह कैसे कहा जा सकता है ? मेरे साथ के लोग जहाज़ पर ही होंगे।"

"नहीं, मुझे लगता है कि वे तुम्हारे साथी ही हैं। यह भी हो सकता है कि सिलवर किसी नाव में बैठकर भाग गया हो और अभी जहाज़ पर जो लड़ाई हुई थी, उसमें तुम्हारे साथियों की जीत हो गई हो। जीतने के बाद तुम्हारे साथियों ने उस पेड़ के पास जो एक छोटा-सा किला है, उसीमें डेरा डाला हो। यह किला कई साल पहले फ्लिंट और उसके साथियों ने बनाया था।"

मैंने काफी गौर से देखा तो सचमुच उस पेड़ के पास एक छोटा-सा किला दिखाई दिया। मैं बोला, "ठीक है, मैं ज़रा एक बार जाकर देख आऊं कि क्या बात है।"

बेनगन बहुत अजिज़ी से कहने लगा, "जाओ, लेकिन पहले यह वादा करते जाओ कि तुम मेरे लिए खाना ज़रूर लाओगे। रोटी, बिस्कुट, केक वगैरह। इतने दिनों से मैं भूखा हो हूं। साथ में मक्खन ज़रूर लाना। अब मैं जाता हूं। मैं तुमसे वहीं मिलूंगा जहां आज सुबह पहली बार मुलाकात हुई थी। पहाड़ के नीचे मैं तुम्हारा इन्तज़ार करूंगा। अगर तुम न आ सको तो और किसीको भेज देना, समझे ना ?"

"ठीक है। अच्छा, अब मैं जाता हूं।" यह कहकर मैं चलने के लिए तैयार हुआ।

लेकिन उसने कई बार फिर मेरा रास्ता रोककर कहा, "देखो,

अपना वादा भूलना मत। अच्छा यह बताओ, अगर वे लोग सिलवर के आदमी हुए तो क्या करोगे ?"

मैंने कहा, "अगर ऐसा हुआ तो मैं वहां से भाग जाऊंगा।"

उसी समय फिर बन्दूक चलने की आवाज़ हुई और दूसरे ही क्षण एक गोली सनसनाती हुई आई और पास के पेड़ में घुस गई। इसके बाद, एक के बाद एक गोली छूटने लगी। हम लोग घबराकर इधर-उधर छिपते हुए भागने लगे। थोड़ी ही देर में हम लोग किनारे पर पहुंच गए। जहाज़ अपनी पहली वाली जगह पर ही पानी में खड़ा था। उसपर लुटेरों का काला झंडा फहरा रहा था। थोड़ी देर तक मैं किनारे पर खड़ा रहा।

इतने में मैंने देखा कि किले में से कुछ लोग बाहर आ गए और किनारे की बालू पर कोई चीज़ घसीटने लगे। मैंने देखा कि वह एक नाव थी शायद वह वही नाव थी जिसपर हम लोग बैठकर किनारे आए थे। फिर एक-एक करके वे लोग किनारे की ओर लौटने लगे।

अब मेरी हिम्मत बंधी। मैं फौरन किनारे की ओर दौड़ चला। थोड़ी ही देर में मैं किले के पास जा पहुंचा। डाक्टर लिवेसे उस समय किले के पास ही खड़े थे। मुझे देखकर बहुत खुश हुए और बोले, "जिम, तुम कहां थे अब तक ? हम लोगों ने सोचा कि कहीं तुम जंगल में तो नहीं खो गए, या लुटेरों ने तुम्हें मार तो नहीं डाला ! अच्छा हुआ तुम लौट आए। लेकिन यह तो बताओ, तुम अब तक कहां छिपे हुए थे ?"

मैंने डाक्टर को सारा किस्सा कह सुनाया। फिर डाक्टर ने बताया कि किस तरह लुटेरों ने जहाज़ में बलवा कर दिया। उन लोगों ने जहाज़ छीन लिया। इस लड़ाई में एक आदमी मारा गया और कई घायल हुए।

डाक्टर के साथ मैं किले में पहुंचा। लेकिन कप्तान ने हम लोगों को आराम नहीं करने दिया। उसने सबको अलग-अलग काम सौंप दिया। किसीको पहरा देने का काम मिला, किसीको

पीने का पानी भरने का काम मिला। उसने सबकी अलग-अलग टुकड़ियां बना दीं। पहली टुकड़ी में मैं, डाक्टर लिवेसे और ग्रे नाम का एक खलासी था। दूसरी में ट्रिलोनी और जायस तथा हंटले नाम के खलासी थे। हम लोग बुरी तरह थक गए थे, लेकिन फिर भी कप्तान हमें छुट्टी देने को तैयार नहीं था। उसने दो आदमियों को बाहर जाकर, जंगल से सूखी लकड़ियां लाने का हुक्म दिया। डाक्टर साहब पर खाना बनाने का भार था।

डाक्टर से चूल्हा ही नहीं जल रहा था। फूंक मार-मारकर उनका दम निकला जा रहा था। बार-बार वे धुएं से बचने के लिए किले के दरवाज़े पर जा खड़े होते थे। एक बार ऐसे ही दरवाज़े के पास थोड़ी देर तक रुककर वे मुझसे बातें करने लगे और बोले, "अपना यह कप्तान बड़ा होशियार आदमी मालूम होता है। लेकिन जिम, यह तो बताओ, वह बेनगन कैसा आदमी मालूम होता है?"

मैंने कहा, "मैं ठीक से कुछ नहीं बता सकता। पता नहीं कैसा है, लेकिन उससे बातचीत करने पर लगा कि उसका दिमाग बिलकुल ठीक नहीं है।"

डाक्टर ने कहा, "तुम ठीक कहते हो। देखो न जिस आदमी ने तीन साल से मनुष्य का चेहरा नहीं देखा, अकेला इस जंगल में भटकता फिर रहा है, भला उसका दिमाग ठीक कैसे हो सकता है! न मालूम कब से वह भूखा ही होगा। तुम कह रहे थे कि वह बिस्कुट, केक और मक्खन मांग रहा था।"

"जी हां! वह पनीर भी मांग रहा था।"

"अच्छी बात है, हम लोग उसके लिए खाने का इन्तज़ाम करेंगे। देखें, वह हमारी क्या मदद कर सकता है।"

शाम को खाना खाने के पहले हम लोगों ने टाम की लाश को बालू में दफन कर दिया। किले में बहुत-सी सूखी लकड़ियों का ढेर इकट्ठा हो गया था, लेकिन फिर भी कप्तान चाहता था कि लकड़ियां और जमा कर ली जाएं। कप्तान चाहता था, किसी

तरह हम लोग इतनी तैयारी कर लें कि जमकर लुटेरों से लड़ाई लड़ सकें और उन्हें अपने काबू में ला सकें। डाक्टर का कहना था कि लुटेरे ज्यादा दिन तक हमारा मुकाबला नहीं कर सकेंगे क्योंकि जहाज़ पर रसद बहुत जल्द खत्म हो जाएगी और हम उन्हें टापू पर उतरने नहीं देंगे। ज्यों ही किसीने किनारे पर पैर रखने की कोशिश की कि उसे फौरन गोली मार दी जाएगी।

हम लोग इसी तरह बात कर रहे थे कि इतने में एक पहरेदार चिल्लाया, "सफेद झंडा! वे लोग सफेद झंडा उड़ा रहे हैं।" इसका मतलब यह था कि लुटेरे हमसे सन्धि करना चाहते थे। इतने में मैंने सुना कि सिलवर किले के बाहर खड़ा होकर कप्तान को आवाज़ दे रहा है और सन्धि का प्रस्ताव रख रहा है।



10

किले के बाहर कुछ दूर दो आदमी खड़े हुए थे। उनमें से एक हाथ में सफेद कपड़ा लेकर हिला रहा था और दूसरा सिलवर खुद था। जो चुपचाप खड़ा था।

पहले तो कप्तान ने हम लोगों को सावधान होने का हुक्म दिया। और फिर चिल्लाकर उन लोगों से कहा, "ठहरो! कौन हो तुम लोग? जवाव दो, वरना हम लोग गोली से उड़ा देंगे!"

उधर से सिलवर ने जवाव दिया, "हम लोग सन्धि का प्रस्ताव लेकर आए हैं। बन्दूक चलाने की ज़रूरत नहीं।"



लेकिन कप्तान पूरी सावधानी बरत रहा था। उसे डर था कि बहुत जल्दी ही लुटेरे हमपर हमला कर देंगे। उसने फौरन हम लोगों को कई टुकडों में बांट दिया और सबको किले के अलग अलग भागों में तैनात कर दिया। मुझे पूरब की ओर ग्रे को पश्चि

चम की ओर खड़ा किया। डाक्टर को बन्दूक देकर वह उसके साथ उत्तर की ओर खड़ा था। अब उसने सिलवर से पूछा, "असल में तुम लोग क्या चाहते हो ?" तब तक उधर से दूसरे आदमी ने जवाब दिया, "कप्तान सिलवर सन्धि के लिए तैयार हैं !"

कप्तान इसपर हंस पड़ा और बोला, "खूब ! सिलवर कब से कप्तान बन गया ? इस नाम के किसी कप्तान को मैं नहीं जानता।"

अन्त में सिलवर खुद कहने लगा, "बात यह है कि इन सब लोगों ने मुझे अपना कप्तान बनाया है। तुम लोग तो जहाज़ छोड़ कर चले आए। लेकिन भला बिना कप्तान के जहाज़ कैसे चल सकता है ? इसलिए इन लोगों ने मुझे कप्तान चुना है। खैर, पहले मेरी बात का जवाब दो। हम लोग सन्धि करना चाहते हैं। अब हम लोग तुम्हारा कहना मानेंगे और तुम्हारे नीचे काम करेंगे। लेकिन तुम्हें हमारी एक शर्त माननी पड़ेगी। ज़रा थोड़ी देर के लिए तुममें से कोई बाहर आ जाए तो मैं सारी बात बता दूंगा।"

कप्तान ने जवाब दिया, "भले आदमी, मैं तुमसे बात नहीं करना चाहता। हमें बाहर आने की गरज़ नहीं है। अगर तुम चाहते हो तो अन्दर आकर बात कर सकते हो। लेकिन खबरदार अगर तुमने धोखा देने की कोशिश की तो याद रखो, यहां से ज़िन्दा नहीं लौट सकोगे।"

सिलवर बोला, "तुम भी खूब हो, भला इसमें धोखे की कौन-सी बात है ? अच्छा, मैं आ रहा हूं।"

यह कहकर वह किले के पास आ गया। लेकिन जब वह पास आ रहा था तो मैंने देखा, वह ज़रा भी घबराया हुआ नहीं था और कोई गाना गुनगुना रहा था। अन्दर आने पर कप्तान ने पूछा, "क्यों सिलवर, क्या चाहते हो ? तुमसे खड़ा न रहते बने तो वहीं बैठ जाओ।"

सिलवर मुस्कराकर बोला, "लेकिन कप्तान अगर मैं अन्दर

आ जाऊं तो कोई एतराज़ है? बाहर काफी ठंड है। सोचो तो सही, तुम एक लंगड़े आदमी को ऐसी जाड़े की सुबह में बाहर बालू पर बैठने को कह रहे हो। अन्दर आ जाऊं मैं?"

कप्तान गम्भीरता से बोला, "नहीं, वहीं रहो। तुमने हमारा विश्वास खो दिया है।"

सिलवर ने बालू पर बैठते हुए कहा, "खैर, अगर तुम यही चाहते हो तो ठीक है, मैं यहीं बैठ जाता हूं। अच्छा सुनो, तुम लोगों ने हमें इस तरह बाहर खुले में छोड़कर अच्छा नहीं किया। कल की रात हम लोगों ने जहाज़ पर बड़ी मुश्किल से काटी है। तुम लोग यहां आराम से किले में रहते हो। यह कहां का न्याय है! हम लोग साथ-साथ चले थे, लेकिन यहां आकर ऐसा क्या हो गया है कि हमें इस तरह एक-दूसरे के दुश्मन की तरह रहना पड़ रहा है? कल रात सचमुच बड़ी ठंड थी, हममें से कोई सो नहीं सका। इसलिए हम लोग तुमसे सन्धि करना चाहते हैं।" फिर किले की ओर इधर-उधर देखते हुए वह बोला, "डाक्टर कहां है? उन्हें मेरा नमस्कार कहो।"

कप्तान ने उसे डांटते हुए कहा, "सिलवर, इधर-उधर की बातें न करो। हमारे पास वक्त नहीं है। तुम्हें जो कुछ कहना हो साफ-साफ कह दो।"

सिलवर मुस्कराकर बोला, "कहना क्या है, तुम तो जानते ही हो, हम लोग खज़ाने की खोज में निकले हैं। किसी न किसी तरह हम लोगों को खज़ाना ढूंढ़ना ही है। हम यह चाहते हैं कि इस काम में तुम और हम मिलकर सब साथ रहें। हम वचन देते हैं कि तुममें से किसी का भी बाल बांका नहीं होगा। लेकिन इसके लिए पहली शर्त यह है कि तुम लोग सीधे से वह नक्शा हमें सौंप दो! याद रखो, उस खज़ाने को तुम लोग कभी नहीं पा सकोगे। हम लोग कई साल से उसको ढूंढ़ रहे हैं और बिना उसे पाए चैन नहीं लेंगे। तुम लोग जाओ, अपने-अपने घर लौट जाओ; यह काम तुम्हारे बूते का नहीं है। अगर तुम नक्शा

लौटा दो तो हम तुम्हें सही-सलामत यहां से जाने देंगे। तो वह नक्शा है न तुम्हारे पास ?"

"हां, हो सकता है कि हमारे पास हो।"

"हो क्या सकता है, तुम्हारे पास है। इसे तुम छिपाने की कोशिश न करो। तुम नक्शा हमें लौटा दो !"

कप्तान ने बीच में ही उसे टोकते हुए कहा, "बेकार की बात न करो, नक्शा तुम्हें नहीं मिल सकेगा। चाहे हमारी जान चली जाए, लेकिन नक्शा हम तुम्हें नहीं दे सकेंगे। और अगर तुम यह सोच रहे हो कि तुम्हारी धमकी से हम डर जाएंगे तो यह तुम्हारी नादानी है। हमें तुम्हारी कोई परवाह नहीं है, तुम जो चाहो कर सकते हो।"

सिलवर कुछ देर तक चुपचाप अपने पाइप में तम्बाकू भरता रहा। फिर बोला, "देखो, नक्शा मुझे दे दो, मैं एक बार और तुमसे कहता हूं। इसी में तुम्हारा भला है। अगर तुम मुझे नक्शा दे दो और जहाज़ के मेरे साथियों की जान ले लो, तो भी मैं एतराज़ नहीं करूंगा। खज़ाना मिलने पर मैं तुम लोगों को बहुत-सा रुपया इनाम दूंगा। याद रखो, तुम उस नक्शे से खज़ाने तक कभी नहीं पहुंच सकोगे।"

"खैर, वो तो बाद में देखा जाएगा। नक्शा तुम्हें नहीं मिल सकता। अगर तुम लोग अपनी भलाई चाहते हो तो हमारी शरण में आ जाओ, हम तुम्हें सही-सलामत इंग्लैंड भेज देंगे। वरना याद रखो, तुम सबको अपनी जान से हाथ धोना पड़ेगा। "तुम्हें शायद मालूम नहीं कि मैं कौन हूं। मैं सरकारी जहाज़ का कप्तान रह चुका हूं। और अब भी सरकारी नौ-सेना से मेरा संबंध है। मैं अपनी वरदी छोड़कर सादे वेश में कप्तान बनकर यहां आया हूं। इतना याद रखो कि न तो तुम बच सकते हो और न तुम्हारा कोई साथी। न तुम जहाज़ लेकर यहां से जा सकोगे और न खज़ाना पा सकोगे।"

सिलवर कुछ देर चुप रहा और फिर गुस्से में कांपते हुए

बोला, "ठीक है। अगर तुम लड़ाई पर ही आमादा हो तो थोड़ी देर में मैं तुम्हारा सारा घमंड चूर कर दूंगा। इस सड़े हुए पुराने किले में बैठकर तुम अकड़ रहे हो, लेकिन तुम्हें बाद में पछताना पड़ेगा।" यह कहकर वह बड़बड़ाता हुआ वहां से चला गया।

उसके जाने के बाद कप्तान ने हम लोगों को ललकारकर कहा, "देखो, सब लोग होशियार रहना। ये लोग जल्दी ही हम पर हमला करेंगे। सब अपनी-अपनी जगह पर तैयार रहो और हाथ में बन्दूकें तैयार रखो। मैंने साफ इन्कार कर दिया है। अब ये लोग बिना लड़े मानेंगे नहीं। हम लोगों के पास आदमी कम हैं, लेकिन हम लोग किले के अन्दर हैं और वे बाहर हैं। हम उनपर आसानी से गोली चला सकते हैं। डाक्टर! तुम दरवाज़े के पास खड़े रहो और चारों तरफ देखते रहो। ट्रिलोनी! तुम्हारा निशाना बड़ा सच्चा होता है। इसलिए तुम भी तैयार हो जाओ। ये लोग उत्तर की तरफ से हमला करेंगे। जिम! तुम्हारा काम है बन्दूक भर-भरकर देना। मैं भी इस काम में तुम्हारी मदद करूंगा, क्योंकि हम दोनों बन्दूकें चलाने में कच्चे हैं।"

इस तरह हम लोग लड़ाई के लिए तैयार हो गए। सब लोग अपनी-अपनी जगह जा खड़े हुए। बीच में बारूद और गोलियां रख दी गईं। एक घण्टा बीत गया। कप्तान बोला, "देखो ज्योंही कोई दिखाई दे, फौरन उसे गोली मार देना।" इतने में सामने से बन्दूक चलने की आवाज़ आई। हमने भी एक हवाई फायर करके उसका जवाब दिया। इतने में दुश्मन ने गोली चलाना शुरू कर दिया। हम भी उनका जवाब देने लगे। कुछ देर तक गोलियां चलती रहीं। डाक्टर की गोली से दुश्मन के दो-तीन आदमी घायल हुए। ट्रिलोनी ने भी कुछ लोगों को घायल किया। पता नहीं, उधर कितने लोग मरे। लेकिन हमारी तरफ दो आदमी मारे गए और कप्तान घायल हो गया।

बाद में पता चला कि इस लड़ाई में दुश्मन की तरफ के पांच आदमी मारे गए। बाकी सब भाग निकले। दूसरे दिन

दोपहर में डाक्टर लिवेसे कमर में तलवार बांधकर और हाथ में एक पिस्तौल लेकर जंगल की तरफ चल पड़े। उनको जाते देखकर ग्रे ने कहा, "डाक्टर साहब को यह क्या सूझा? अकेले जंगल में जा रहे हैं।"

उसकी बात का मैंने उत्तर दिया, "लगता है, डाक्टर साहब बेनगन से मिलने जा रहे हैं।"

डाक्टर के जाने के बाद मैंने भी अपने साथियों की नज़र बचाकर जंगल में जाने का निश्चय किया। सब लोग अपने-अपने काम में लगे थे। मौका पाकर मैं भी किले से बाहर आकर दौड़ने लगा। अपनी जेब में मैंने कुछ बिस्कुट वगैरह रख लिए थे और एक भरी हुई बन्दूक भी साथ ले ली थी।

बाहर आकर मैं झाड़ियों और पेड़ों के बीच छिपते हुए उस पहाड़ की ओर दौड़ने लगा जहां पहले दिन बेनगन से मेरी मुलाकात हुई थी। मैं जानता था कि बेनगन ने वहीं अपनी नाव भी छिपा रखी थी। पहाड़ के पास आने पर मेरी नज़र एक गुफा पर पड़ी। मैं उसीमें घुस गया। अन्दर बेनगन की नाव रखी हुई थी। वह इतनी हल्की थी कि मैं बहुत आसानी से उसे उठाकर बाहर ले आया। मैंने सोचा कि रात में नाव में जाकर मैं चुपके से जहाज़ का लंगर काट दूंगा तो जहाज़ भटक जाएगा और फिर लुटेरे हमारा कुछ नहीं कर कर सकेंगे। इसलिए मैं अंधेरा होने का इन्तज़ार करने लगा।

जब रात हो गई तो मैंने अपनी नाव पानी में छोड़ी; लेकिन वह नाव इतनी हल्की थी कि उसे ठीक से चलाना मेरे लिए बड़ा मुश्किल हो रहा था। जब मैं उसे दाहिनी तरफ चलाता था तो वह बाईं ओर मुड़ जाती थी और बाईं ओर चलाता था तो दाहिनी ओर मुड़ जाती थी। काफी देर बाद बड़ी मुश्किल से मैं उसे जहाज़ के पास तक ले गया। रात बिलकुल अंधेरी थी। जहाज़ में से कोई दिखाई नहीं दे रहा था; सिर्फ दो-एक आदमियों के बोलने की आवाज़ आ रही थी। और पास जाने पर

मैंने सुना कि असल में वे दोनों आपस में ज़ोर-ज़ोर से एक-दूसरे को डांट रहे थे और गाली बक रहे थे।

इस मौके से लाभ उठाकर मैंने जहाज़ का लंगर काटना शुरू किया। डर और घबराहट के मारे मेरा दिल धड़कने लगा। लेकिन थोड़ी ही देर में मैंने लंगर की रस्सी काट दी। लंगर के



कटते ही जहाज़ बहने लगा। मेरी नाव जहाज़ के पीछे थी, इसलिए वह भी जहाज़ के साथ-साथ बहने लगी। मैंने अपनी नाव निकालने की बड़ी कोशिश की। लेकिन जहाज़ उसे खींचे ले जा रहा था।

मुझसे बड़ी गलती हो गई। अब मैं खुद संकट में फंस गया था। जहाज़ धीरे-धीरे गहरे समुद्र की ओर बढ़ता जा रहा था। मैं डर रहा था कि अब क्या होगा! गहरे समुद्र में अपनी इस हल्की नाव के सहारे कितने दिन टिक सकूंगा!

मैंने जहाज़ की ओर देखा। लेकिन वहां कोई दिखाई नहीं दिया। जहाज़ में बिलकुल अंधेरा था। मैंने सोचा कि अब तो जो कुछ होना होगा वही होगा, लेकिन नाव छोड़कर मुझे जहाज़ पर चढ़ जाना चाहिए। एक तरफ जहाज़ से लंगरवाली कटी हुई रस्सी लटक रही थी। मैं धीरे-धीरे नाव को उसके पास तक ले गया और रस्सी के सहारे जहाज़ में चढ़ गया।

जहाज़ पर जाकर मैंने देखा कि एक कोने में तीन-चार आदमी मरे हुए पड़े थे। चारों तरफ शराब की खाली बोतलें लुढ़क रही थीं। मैं समझ गया कि ये लोग शराब पीकर आपस में लड़ रहे थे।

जहाज़ अपने-आप बहता चला जा रहा था। थोड़ी देर बाद जहाज़ टापू के किनारे पर निकलती हुई चट्टान से जा टकराया। मैंने ईश्वर को धन्यवाद दिया और फौरन आंख मूंदकर चट्टान पर कूद गया। किनारे पर पहुंचते ही मैं किले की तरफ भागने लगा। थोड़ी देर में मैं किले के सामने जा पहुंचा। लेकिन मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि किले में बिलकुल अंधेरा था। शायद सब सो गए थे।

मैं धीरे-धीरे किले के दरवाज़े के पास पहुंचा और अन्दर घुसने की कोशिश करने लगा। इतने में दरवाज़े के पास अचानक किसीके पैर से मेरा पैर टकराया। मैं समझ नहीं पाया कि यह कौन है। इतने ही में एक तोता दिखाई दिया। वह ज़ोर से

चीखने लगा। मेरी समझ में नहीं आया कि यहां कौन लेटा है, और यह तोता कहां से आ गया। फिर दूसरे ही क्षण मेरे होश उड़ गए। यह तोता तो सिलवर का था। वह अक्सर जहाज़ पर उससे बातें किया करता था। अब मैं समझा कि दुश्मन ने किले पर कब्ज़ा कर लिया। इस समय किला सिलवर के साथियों के हाथ में था। मेरे साथी वहां नहीं थे, शायद वे किला छोड़कर कहीं चले गए थे। तोते की आवाज़ से दुश्मन के आदमी जाग गए। सिलवर चीखा, "कौन है? ठहरो!"

सिलवर की आवाज़ सुनकर मैं सिर पर पैर रखकर भागा। लेकिन भागते-भागते एक आदमी से टकराकर गिर पड़ा। उसने फौरन कसकर मेरा हाथ पकड़ लिया। तब तक सिलवर ने अपने किसी आदमी से कहा, "ज़रा मशाल लाओ तो। कौन है देखें!" फौरन एक आदमी मशाल लेकर आगे आया। उन लोगों ने मुझे खींचकर किले में बन्द कर लिया।

11



जब वे लोग किले में मुझे खींच ले आए तो मैंने मशाल के उजाले में देखा कि किले में हमारे दल का कोई भी आदमी नहीं था। पता नहीं, वे लोग कहां गए थे। मुझे डर हुआ कि कहीं इन लोगों ने उन सबको मार तो नहीं डाला। किला पूरी तरह इनके हाथ में था। मैं भी अब इनके हाथ में था और बचने की कोई उम्मीद नज़र नहीं आ रही थी।

सिलवर मेरी ओर देखकर बोला, "जब पहले-पहल मैंने तुम्हें देखा था, तभी मैं जान गया था कि तुम बहुत चालाक लड़के हो। मैं असल में तुम्हें बहुत चाहता हूं। तुम मेरे विरोधियों के साथ रहते हो, फिर भी मैं तुम्हें बहुत चाहता हूं। अगर तुम मेरे साथ रहने लगो तो कितना अच्छा हो? लेकिन इतना तय समझ लो कि अब तुम्हें हमारे साथ ही रहना पड़ेगा, क्योंकि तुम्हारे दल के लोग अब तुम्हें अपने साथ रखने को तैयार नहीं होंगे। तुम मेरे साथ ही रहो। मैं तुम्हें बहुत आराम से रखूंगा।"

उसकी बात से मुझे इतना तो मालूम हो गया कि मेरे दल के लोग अभी मरे नहीं हैं, लेकिन सिलवर ऐसा आदमी था कि उसकी बात पर आसानी से विश्वास करना संभव न था।

वह फिर से कहने लगा, "तुम इस समय हमारे हाथ में हो। लेकिन हम तुम्हारी जान नहीं लेंगे। हम तो यही कहेंगे कि तुम खुशी-खुशी हमारे साथ आ जाओ। मैं तुम्हें सोचने का वक्त देता हूं, अच्छी तरह सोच लो।"

मैंने कहा, "पहले यह तो बताओ कि तुम लोग यहां कैसे पहुंचे हो? हमारे दल के लोग कहां गए?"

सिलवर कहने लगा, "कल सवेरे डाक्टर लिवेसे सफेद झंडे के साथ हमारे पास सन्धि का प्रस्ताव लेकर आए थे। आने पर उन्होंने देखा कि जहाज़ अपनी जगह पर नहीं है। हम लोग उस समय किले पर हमला करने के लिए किनारे पर तैयारी कर रहे थे। उन्होंने कहा, 'अगर जहाज़ गायब हो गया तो हम लोग यहां से लौटेंगे कैसे? इसलिए हम लोगों को मिलकर पहले जहाज़ खोज लेना चाहिए।' लेकिन हम लोगों ने इससे इंकार कर दिया। वे लोग जहाज की खोज में चल पड़े। इधर किले पर हमने कब्ज़ा कर लिया। हो सकता है जहाज़ उन लोगों के हाथ में आ जाए। लेकिन अगर जहाज़ पर उनका कब्ज़ा हो गया, तो हम लोग उसपर पैर नहीं रख सकेंगे।"

"इस तरह किला तो अब हमारे हाथ में आ गया। उन लोगों

का पता नहीं कि वे सब कहां गए। उन्होंने तुम्हारा इन्तज़ार भी नहीं किया। बल्कि जाते-जाते यह कह गए, 'जिम न मालूम कहां चला गया है। खैर, हमें उसकी कोई ज़रूरत भी नहीं। वह चाहे जहां रहे।"

मैंने कहा, "तुम चाहे जो कुछ कहो, लेकिन मैं तुम्हारा साथ नहीं दूंगा। तुम्हारे साथ मैं कभी नहीं रह सकता। मुझे मरने का डर नहीं है। तुमने झगड़ा करके खज़ाना अपने हाथ से खो दिया और जहाज़ भी खो दिया। इस तरह सारी मेहनत पर पानी फेर दिया। लेकिन शायद तुम्हें यह नहीं मालूम कि इस काम में मेरा कितना हाथ है। जहाज़ तुम्हारे हाथ से निकल गया, इसका कारण यह है कि मैंने उसका लंगर काट दिया था। मैंने जहाज़ को ऐसी जगह छिपाकर रखा है कि अब तुममें से कोई उसे पा नहीं सकता है। जब तक तुम मेरी शरण में नहीं आओगे, तब तक तुममें से कोई भी इस टापू को छोड़कर जा नहीं सकता। तुम लोग अगर मुझे बचाओगे, मेरी जान नहीं लोगे तो मैं भी तुम्हारी मदद करूंगा। अगर तुम मुझे मार डालते हो तो याद रखो, तुम्हें भी इस टापू पर जान दे देनी पड़ेगी। इसमें तुम्हारा खुद का भला है कि तुम मेरी जान न लो; बोलो क्या सोचते हो?"

इतने में मोरगेन नाम का एक लुटेरा छुरा निकाल कर बोला, "मार डालो इस छोकरे को! नक्शा इसी के पास है। इसने हमारा बड़ा नुकसान किया है।"

लेकिन सिलवर उसे रोककर बोला, "इसे कोई छूना मत। अगर इसे कुछ हो गया तो तुम लोगों की खैर नहीं।"

मोरगेन दो कदम पीछे हट गया। उसके साथ के दूसरे लुटेरे मारे क्रोध के दांत पीसने लगे। उनमें से एक बोला, 'देखते क्या हो? मार डालो इस लड़के को! सिलवर हमारा कर ही क्या लेगा? इससे डरने की ज़रूरत नहीं है।"

सिलवर चीखकर बोला, "क्या कहा तुमने! मेरा तुम्हें डर

नहीं है ! तुम्हारी यह हिम्मत ! आओ देखें पहले कौन आता है ! मैं एक-एक के टुकड़े कर दूंगा।"

उसके गुस्से से सब डरते थे। फौरन वे लोग पीछे हट गए। किसी की हिम्मत नहीं हुई कि आगे बढ़कर उससे बात करे। उन्हें चुप देखकर सिलवर फिर बोला, "गीदड़ो आखिर तुम लोगों ने क्या सोचकर मुझे अपना कप्तान बनाया है ? इसका यही मतलब है ना कि मैं तुम सबसे अधिक ताकतवर हूं। मैं इस लड़के को बहुत चाहता हूं। यह बड़ा बहादुर लड़का है। तुम लोगों में इसके बराबर भी हिम्मत नहीं है।"

उसकी बात सुनकर सब चुप हो गए। मैं दीवार के पास खड़ा था, धीरे-धीरे सब लोग वहां से चले गए।

फिर सिलवर बोला, "देखो मैंने किस तरह तुम्हें बचाया है ! अगर मैं न होता तो अभी ये लोग तुम्हारी जान ले लेते। मैंने जिस तरह तुम्हें बचाया है, क्या इसी तरह कभी मैं आफत में फंसा तो तुम मेरी जान नहीं बचाओगे ?"

मैं चुप रहा। अन्त में वह फिर कहने लगा, "जहाज़ न मालूम कहां चला गया है। किसी को पता नहीं ! जिम अगर तुम किसी तरह जहाज़ का पता लगा लो और यहां से जाने की तैयारी करो, तो मुझे अपने साथ ले जाना न भूलना। अच्छा और सुनो, आज से मैं डाक्टर और ट्रिलोनी का साथ देने को तैयार हूं। मैं जानता हूं कि जहाज़ बहकर कहीं डूब नहीं गया है। जहाज़ को उन्हीं लोगों ने कहीं छिपा रखा है। अच्छा, यह तो बताओ जिम, तुम्हारे डाक्टर ने खज़ाने का नक्शा मुझे क्यों दे दिया ?"

यह कहकर सिलवर ने नक्शा मेरे सामने रख दिया। मैं फौरन पहचान गया कि वह वही नक्शा था जो डाक्टर के पास था। मेरी समझ में कुछ नहीं आया। आखिर डाक्टर ने यह नक्शा इसे क्यों दे दिया ? यह तो उसका दुश्मन था।

सिलवर कहने लगा, "पता नहीं, इस तरह नक्शा मुझे दे

देने के पीछे क्या राज़ है। वे लोग इतनी आसानी से नक्शा मुझे सौंप देंगे इसकी मुझे उम्मीद नहीं थी। हो सकता है इसके पीछे उनकी कोई बहुत बड़ी चाल हो।"

12



सिलवर इधर मुझसे बातें कर रहा था और उधर उसके कुछ साथी बाहर बैठ कर आपस में कुछ सलाह-मशवरा कर रहे थे। देर तक उनकी बैठक होती रही। फिर अचानक उनमें से एक अन्दर आया और सलाम करके सिलवर से मशाल मांगने लगा। सिलवर ने मशाल दे दी। जब वह मशाल लेकर चला गया तो अन्दर बिलकुल अंधेरा हो गया। हम दोनों अंधेरे में बैठे रहे।

सिलवर अब मुझसे एक मित्र की तरह बातें करने लगा। बोला, "कितनी अच्छी हवा चल रही है ! क्यों, है ना जिम ?"

इतने में मेरी नज़र अपने पास वाली दीवार पर पड़ी और मैंने देखा कि उसमें एक छोटा-सा छेद है। मैं अंधेरे में उस छेद की ओर बढ़ गया और उसमें आंख लगाकर बाहर का दृश्य देखने लगा।

मैंने उसमें देखा कि बाहर लुटेरे गोल घेरा बांधकर खड़े थे। उनमें से एक आदमी घुटनों के बल बैठा था। उसने सामने बाइ-बिल रखी हुई थी और उसके हाथ में एक तलवार चमक रही थी। ऐसा लगता था जैसे वे लोग आपस में बाइबिल को छूकर कोई प्रतिज्ञा कर रहे थे। मैंने सोचा कि कहीं ये मुझे और सिलवर

को मारना तो नहीं चाहते हैं ? हो सकता है, इन्होंने अभी बैठकर यही तय किया हो।

थोड़ी देर में वह आदमी उठकर खड़ा हो गया। इसके बाद सब अन्दर आ गए। पांच-छः आदमी सिलवर के सामने आकर खड़े हो गए। फिर उन्होंने एक आदमी को सिलवर की ओर धकेला। सिलवर बोला "आओ, डरते क्यों हो, मैं तुम्हें खा नहीं जाऊंगा। यह तुम हाथ में क्या लाए हो ? क्या इन लोगों ने तुम्हें अपना दूत बनाया है ? तो तुम डरते क्यों हो ? लाओ देखें, क्या लिखकर लाए हो !"

उसकी बात सुनकर उस आदमी को थोड़ी हिम्मत आई। वह कुछ आगे बढ़ा और फिर उसने सिलवर के हाथ में एक कागज़ रख दिया। कागज़ देते ही वह वहां से भागकर चला गया।

सिलवर कागज़ की ओर देखता रहा और फिर बोला, "अच्छा, यह तो काला निशान है। और यहां तुम लोगों को कागज़ कहां से मिला ? अच्छा यह तुमने बाइबिल फाड़कर उसमें से कागज़ निकाला है ! छिः-छिः !"

लुटेरों में एक लम्बा-चौड़ा आदमी भी था। वह बोला, "सिलवर इन बेकार की बातों को बन्द करो। हम लोगों ने बहुत सोच-विचारकर तुम्हें यह काला निशान सौंपा है। अब तुम पूरी चिट्ठी पढ़ लो।"

सिलवर बोला, "ठीक है जार्ज ! अभी देखता हूं क्या लिखा है। वाह, यह तो तुम्हारी लिखावट मालूम होती है। बड़ा साफ लिखते हो। जैसे बिलकुल छापे के अक्षर हों। अच्छा अब समझा ! तो कप्तान बनने की अब तुम्हारी बारी है। ठीक है भाई ! ठीक है। अगर सब चाहते हैं तो तुम्हीं कप्तान बन जाओ।"

जार्ज कहने लगा, "हां, ये लोग अब तुम्हें कप्तान मानने को तैयार नहीं हैं। कहो तो तुम्हारे सामने सबका मत ले लिया जाए।"

"अरे, रहने भी दो। बड़े मत लेने वाले बने हो ! खैर, यह



मज़ाक बन्द करो। कप्तान मैं ही हूं और मैं ही रहूंगा। देखें किसमें हिम्मत है जो मुझे कप्तान मानने से इन्कार कर सकता है। तुम्हारे काले निशान की मैं बिलकुल परवाह नहीं करता। तुम्हें जो करना हो, कर लेना; लेकिन याद रखना, मैं इस तरह का मज़ाक पसन्द नहीं करता।''

जार्ज कहने लगा, ''सिलवर! तुमने हमें धोखा दिया है। दुश्मन के लोग, जब हमारी मुट्ठी में आ गए थे तब तुमने उन्हें छोड़ क्यों दिया? वे लोग मौका पाते ही यहां से भाग निकले।

और जब हम उनका पीछा करने के लिए तैयार हुए तब भी तुमने जान-बूझकर हमें रोक दिया! तुमने कहा कि उनका पीछा करने की कोई ज़रूरत नहीं। हम लोग फौरन समझ गए कि तुम्हारा इरादा क्या है। तुम उनके हिस्से में से कुछ न कुछ पाने की उम्मीद रखते हो। और फिर तुमने इस लड़के को क्यों बचाया?"

सिलवर कहने लगा, "जार्ज, तुम्हारी बात पूरी हो गई ना? अब तो तुम्हें कुछ नहीं कहना है? अगर कुछ और मन में हो तो कह डालो!"

जार्ज बोला, "मैंने जो कुछ कहा है, क्या वह कम है? तुम्हारे लिए तो इतना ही काफी होना चाहिए। तुम अपने वादे के पक्के माने जाते रहे हो और तुमने ही हमें धोखा दिया।"

सिलवर ने कहा, "ठीक है, लेकिन तुम्हारी बात का मेरा जवाब यह है!" यह कहकर उसने सबके सामने ज़मीन पर एक कागज़ फेंक दिया।

मैंने कागज़ की ओर देखा और फौरन पहचान लिया। यह वही नक्शा था। नक्शा देखते ही वे लोग उसपर टूट पड़े, और आंखें फाड़-फाड़कर उसे देखने लगे। सबको आश्चर्य हो रहा था कि यह नक्शा सिलवर के पास कैसे आ गया। उनमें से प्रत्येक, नक्शे को सबसे पहले देखने के लिए उत्सुक था। सबकी आंखें खुशी से चौंक रही थीं। उनके चेहरों से ऐसा लगता था जैसे खज़ाना उन्हें मिल गया हो। उनमें से एक बोला, "क्या यही फ्लिंट का नक्शा है? इसके नीचे तो उसके दस्तखत भी दिखाई देते हैं!"

जार्ज कहने लगा, "खज़ाना मिल गया। लेकिन इस सबको लेकर अब वापस अपने देश कैसे लौटा जाएगा? अपना जहाज़ तो गायब हो चुका।"

सिलवर कहने लगा, "यह सब तुम्हीं लोगों की वजह से हुआ है। तुम लोगों ने ही बेवकूफी करके जहाज़ गंवा दिया। मैंने तो किसी न किसी तरह अपना काम पूरा कर ही लिया। देखो, मैंने

उनसे खज़ाने का नक्शा छीन लिया। अब बताओ, हममें से कौन ज्यादा अच्छा आदमी है ? तुम कप्तान बनना चाहते हो ना ? ठीक है; मैं इसी क्षण कप्तान का पद छोड़ने को तैयार हूं। मुझे अब किसकी गरज पड़ी है। तुम जिसे चाहो कप्तान बना लो।"

जार्ज और मोरगेन का चेहरा उतर गया। वे लोग कुछ बड़बड़ाने लगे। इतने में सिलवर ने वह काले निशान वाला कागज़ उसके सामने फेंक दिया। जार्ज ने कागज़ उठाकर रख लिया। इस तरह उस दिन, उन लोगों का झगड़ा खत्म हुआ। हम लोग सोने चले गए। जार्ज बाहर पहरा देने लगा। सिलवर भी सो गया। अब उसे किसी बात की चिन्ता नहीं थी। खज़ाने का नक्शा उसके हाथ में था और उसने अपने विरोधियों को भी शान्त कर लिया था। वह मज़े में खर्राटे भरता हुआ सो रहा था।

13



सवेरे किसीको पुकारते सुनकर हम लोगों की नींद खुल गई। हमने सुना कि बाहर से डाक्टर की आवाज़ आ रही थी। डाक्टर बड़े प्रसन्न और मित्र की भावना में बोल रहे थे। उनकी आवाज़ सुनकर मेरी खुशी की सीमा नहीं रही, लेकिन मुझे यह सोचकर बड़ी शर्म आ रही थी कि मैं बिना उनसे पूछे भाग गया था। अब मैं उनके सामने कैसे जाऊं, यही नहीं तय कर पा रहा था।

डाक्टर के आते ही सिलवर उनके पास पहुंचा और बोला, "डाक्टर, हमारे दल में एक और आ गया है। ज़रा उससे मिलिए !"

डाक्टर ने पूछा, "कौन है ! जिम तो नहीं ?"

"जी हां, वही है। रात को वह यहां लौट आया और आराम से रहा।"

डाक्टर कुछ देर चुप रहा। फिर बोला, "ठीक है, जिम से बाद में मिलूंगा। पहले मैं अपना फर्ज़ पूरा कर लूं। रोगी कहां हैं ?"

इसके बाद डाक्टर सिलवर के साथ रोगियों को देखने चले गए। मैं रास्ते में ही खड़ा था। मेरी ओर देखकर डाक्टर मुस्कराए और आगे बढ़ गए। मुझे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हो रहा था कि डाक्टर बिना किसी संकोच या भय के दुश्मनों के बीच घूम रहे थे। उन्हें उन लोगों से कोई डर नहीं था। एक डाक्टर की हैसियत से वे इन घायलों और मरीज़ों की मदद करने आए थे।

रोगियों और घायलों को देखने और कुछ देर तक उनसे मज़ाक करने के बाद डाक्टर वापस लौटे। मेरे पास आकर उन्होंने सिलवर से कहा, "अब अगर तुम इजाज़त दो, तो मैं थोड़ी देर जिम से बात कर लूं।"

इसपर जार्ज बीच में ही बोला, "नहीं, जिम से तुम बात नहीं कर सकते। हम तुम्हें उससे नहीं मिलने देंगे।"

लेकिन सिलवर उसे रोककर बोला, "तुम चुप रहो ! तुम कौन होते हो मना करनेवाले ? अगर ये जिम से बात करते हैं तो इसमें हर्ज़ ही क्या है ?" फिर वह डाक्टर की ओर मुड़कर बोला, "डाक्टर साहब, आपकी मेहरबानी के लिए शुक्रिया। सचमुच आप नहीं आते तो हमारे कई आदमी बीमार होकर मर गए होते। आप ज़रा बाहर जाकर इन्तज़ार कीजिए, मैं अभी जिम को लेकर बाहर आता हूं। ऐसा लगता है कि जिम को उस जहाज़ का पता है। वह हमारी बड़ी मदद कर सकता है।"

डाक्टर बाहर जाकर मेरा इन्तजार करने लगे। थोड़ी देर बाद सिलवर मुझे लेकर बाहर पहुंचा। उसने डाक्टर से कहा, "डाक्टर साहब, इतना आप याद रखिए कि मैंने जिम को जान बचाई है। अगर मैं न होता तो मेरे साथियों ने इसे देखते ही मार डाला होता। लेकिन ऐसा करने के कारण मुझे अपने साथियों से झगड़ा मोल लेना पड़ा है। वे लोग मुझसे बहुत नाराज़ हैं। अगर उनकी चले तो वे एक क्षण भी मुझको ज़िन्दा न रहने दें। इसलिए मैं आपसे प्रार्थना करना चाहता हूं कि आप जिम के साथ-साथ मेरी जान बचाने की भी कोशिश करें। मैं यह आपसे भीख मांग रहा हूं। मैं चाहता हूं कि मुझे भी आप अपने साथ जहाज़ में ले चलें। अच्छा, अब आप जिम को थोड़ी दूर आगे ले जाकर इससे बातचीत कर लीजिए। मैं यहीं खड़ा हूं।"

यह कहकर सिलवर वहां से कुछ दूर हटकर एक पेड़ के पास खड़ा हो गया। डाक्टर ने मुझे अपने पास बुलाकर कहा, "जिम, यह तुमने क्या किया! मेरी समझ में यह नहीं आता कि तुम यहां कैसे आ गए। ऐसे मौके पर जबकि तुम्हें हमारा साथ देना चाहिए था, तुम हमें छोड़कर चले आए! हमारा कप्तान लड़ाई में घायल हो गया है। उसे तुम्हारी मदद की जरूरत थी, लेकिन तुम ऐसे मौके पर भाग गए। क्या तुमने यह ठीक किया?"

डाक्टर की यह बात सुनकर मुझे रोना आ गया। फिर मैंने डाक्टर को पूरा किस्सा कह सुनाया और यह भी बताया कि जहाज़ इस समय कहां खड़ा है। यह सुनकर डाक्टर ने कहा, "अच्छा, तो यह बात थी! जहाज़ को तुमने छिपाया है? शाबाश! अच्छा जिम, बाकी बातें तो बाद में होंगी। तुमने बहुत काम किया। तुमने बेनगन को खोज निकाला और जहाज़ को छिपा दिया। लेकिन अभी तुम्हें इन्हीं लोगों के कब्ज़े में रहना पड़ेगा। किसी न किसी तरह हम तुम्हें छुड़ाने की कोशिश करेंगे।"

फिर उन्होंने दूर खड़े हुए सिलवर को आवाज़ देकर कहा, "सिलवर! अच्छा, मैं अब चलता हूं। देखो, खज़ाना खोजने में

जल्दबाज़ी मत करना !"

सिलवर पास आकर बोला, "यह आप क्या कह रहे हैं, डाक्टर साहब ! जल्दी तो हमें करनी ही पड़ेगी। अब तो बिना खज़ाना खोजे, मेरी या इस लड़के की जान बचाना मुश्किल है। लेकिन डाक्टर, एक बात मेरी समझ में नहीं आती कि आखिर आपने नक्शा मुझे क्यों दे दिया ? और आप लोग किला छोड़-कर चले क्यों गए ?"

डाक्टर कुछ देर तक सोचकर बोले, "देखो, मुझे जो कुछ तुमसे कहना था वह मैं तुम्हें कह चुका हूं। इससे ज्यादा बताने का हक इस समय मुझे नहीं है। मौका आने पर तुम्हें सब कुछ मालूम हो जाएगा। फिर भी मैं तुम्हें वचन देता हूं कि अगर हम दुश्मनों के हाथ से बच गए तो तुम्हें बचाने की कोशिश करेंगे।"

सिलवर ने चुपचाप डाक्टर को धन्यवाद दिया।

डाक्टर बोले, "अच्छा, अब मैं चलूं, जिम तुम्हारे साथ ही रहेगा। यह तुम्हारे बहुत काम आ सकता है। इसका ख्याल रखना।"

यह कहकर डाक्टर फौरन वहां से जंगल की तरफ चला गया।

डाक्टर के जाने के बाद सिलवर मुझसे कहने लगा, "जिम, मैंने तुम्हारी जान बचाई और तुमने मेरी जान बचाई। मैं इसे कभी नहीं भूलूंगा। तुम डाक्टर के साथ जाने की बजाय, मेरे साथ रुकना पसन्द कर रहे हो; यह भी कभी नहीं भूलूंगा। मुझे आशा है कि आगे भी तुम मेरा साथ दोगे, क्योंकि मेरे साथियों में अब कोई भी मेरा मित्र नहीं है। तुम्हारे अलावा यहां मैं और किसी का भरोसा नहीं कर सकता। अच्छा, चलो किले में चला जाए। थोड़ी ही देर बाद हम लोग खज़ाने की खोज में निकलेंगे। लेकिन इतना याद रखना कि तुम मुझसे दूर जाने की कोशिश न करना वरना ये लोग तुम्हें भी मारना चाहते हैं।"

इसी बीच एक आदमी ने आकर कहा, "सिलवर, खाना तैयार है, चलो।"

हम लोग अन्दर चले गए। सब बैठकर खाना खाने लगे। उस दिन सबने खूब कसकर खाना खाया। फिर सिलवर बोला, "साथियो, हम लोगों को जिस चीज़ की ज़रूरत थी, वह अब हमारे हाथ में आ गई है। हम खज़ाने का नक्शा चाहते थे, वह हमें मिल गया है। लेकिन जहाज़ नहीं मिला। जहाज़ को उन लोगों ने कहां छिपा रखा है, इसका कोई पता नहीं। लेकिन जहाज़ को खोजने के पहले, हमें खज़ाना खोज लेना चाहिए। उसके बाद हम जहाज़ को खोजते रहेंगे।"

उसके सब साथी चुपचाप बैठे उसकी बातें सुन रहे थे। कुछ देर रुककर वह बोला, "अब आगे से जिम हमारे साथ ही रहेगा। यह बड़ा बहादुर और होशियार लड़का है। इसकी मदद से हम लोग जहाज़ खोज सकेंगे। यह जहाज़ के बारे में सब कुछ जानता है और फिर जहाज़ पर बैठकर हम लोग अपने देश आसानी से लौट जाएंगे। और हमारे विरोधी देखते रह जाएंगे।"

उसकी बात सुनकर उसके साथी बहुत खुश हुए। मुझे लगा कि सिलवर बड़ा चालाक आदमी है। वह दोनों तरफ के लोगों को खुश रखने की कोशिश कर रहा था।

अब हम लोग खज़ाने की खोज में जाने की तैयारी करने लगे। सब लोगों ने अपने-अपने हथियार संभाले। सिलवर ने अपनी कमर में तलवार बांधी और हाथ में बन्दूक ली। मुझे भी उसने हथियार दिए। फिर मेरी कमर में एक मज़बूत रस्सी बांधकर उसका एक सिरा अपने हाथ में पकड़ा। कभी हाथ खाली करना होता था तो वह रस्सी को दांतों से दबा लेता था, लेकिन छोड़ता नहीं था। इस तरह तैयार होकर हम लोग खज़ाने की खोज में चल पड़े।

नक्शे के मुताबिक चलते-चलते हम लोग पहाड़ के पास आ पहुंचे। वहां कई छोटे-बड़े पेड़ थे। हमें उस जगह का सबसे ऊंचा पेड़ खोजना था। क्योंकि उस नक्शे में एक सबसे ऊंचे पेड के पास ही खज़ाना दिखाया गया था। इतने सारे पेड़ों के बीच

सबसे ऊंचा पेड़ खोजना आसान काम नहीं था।

पहाड़ की तलहटी में एक छोटा-सा झरना बह रहा था। धीरे-धीरे हम लोग पहाड़ की चढ़ाई चढ़ने लगे। जैसे-जैसे ऊपर चढ़ते जा रहे थे, पहाड़ की चढ़ाई भी बढ़ती जा रही थी। आसपास के पेड़ों पर रंग-बिरंगे फूल खिले हुए थे। हवा में फूलों की खशबू भरी हुई थी। सब लोग मस्ती में इधर-उधर टहलते हुए आगे बढ़ रहे थे। मैं और सिलवर सबसे पीछे रह गए। एक तो वह लंगड़ा था और दूसरे उसने मेरी रस्सी पकड़ रखी थी, इसलिए वह तेज़ी से चल नहीं पाता था।

हम लोग धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे। कभी-कभी किसी चट्टान को पार करते समय, मैं अपने हाथ का सहारा देकर उसे ऊपर खींचता था। हम लोग करीब आधे मील ऊपर चढ़ आए थे। पहाड़ की चोटी अब थोड़ी ही दूर रह गई थी। हम लोग आपस में एक-दूसरे से बातें करते और मज़ाक करते हुए चल रहे थे। हमारे दल के कुछ लोग हमसे कुछ आगे बढ़ गए थे, उनसे बातचीत करते समय हम लोगों को काफी ज़ोर से चिल्लाना पड़ता था।

इतने में अचानक पेड़ों के बीच से किसीके ज़ोर से चीखने की आवाज़ आई। फिर फौरन ही दूसरी चीख सुनाई दी। चीख सुनकर हमारे साथियों में भगदड़-सी मच गई। सबके चेहरे से रंग उड़ गया। साफ ज़ाहिर था कि सभी बुरी तरह डर गए थे। इतने में फिर किसीकी दबे हुए स्वर में कुछ गाने और चीखने की आवाज़ आई।

हम लोग इकट्ठे होकर धीरे-धीरे उधर ही बढ़ चले। कुछ दूर जाने पर हमने देखा कि एक पेड़ के नीचे किसीकी गठरी पड़ी हुई थी। उसके पास ही कुछ कपड़े के फटे-चिटे टुकड़े पड़े हुए थे। यह सब देखकर हम लोगों का दिल धड़कने लगा। जार्ज आगे बढ़कर उन कपड़ों को एक लकड़ी से टटोलने लगा और फिर बोला, "यह तो किसी जहाज़ी के कपड़े मालूम होते हैं!"



सिलवर कहने लगा, "और क्या, इस टापू पर जहाज़ी ही तो आ-आकर मरते रहे हैं। वरना यहां कोई पादरी थोड़े ही खज़ाने की खोज में आता है।"

फिर उस हड्डियों के ढांचे को गौर से देखकर बोला, "यह फ्लिट का ही काम हो सकता है। फ्लिट के साथ छः खलासी थे, उसने एक-एक करके सभी को मार डाला होगा। इस पिंजरे को देखकर लगता है कि यह कोई लम्बा आदमी था। मोरगेन! तुम्हें याद है, फ्लिट के साथ डाइस नाम का एक लम्बा खलासी रहता था। हो सकता है, यह डाइस की हड्डियां हों।"

"हां, डाइस को मैं अच्छी तरह जानता था। टापू पर उतरते समय वह मुझसे छुरा मांग ले गया था।"

सिलवर कहने लगा, "अरे, ईश्वर की कृपा से फ्लिट ज़िन्दा नहीं है। अगर वह ज़िन्दा होता तो आज किसीको टापू पर पैर नहीं रखने देता। हम लोगों की भी आज यही दशा होती।"

"हां, इसमें तो कोई शक नहीं कि फ्लिट मर गया है, क्योंकि उसके मरने के समय मैं वहां मौजूद था।"

इतने में अचानक कुछ पेड़ों के पीछे से फिर किसीके गाने की आवाज़ आई। यह आवाज़ बड़ी डरावनी-सी थी और गाना पुराने जहाज़ियों का गाना था। इस गाने को एक बार मैंने अपनी सराय में कप्तान बिल के मुंह से भी सुना था।

इस आवाज़ को सुनते ही सब कांपने लगे। मारे डर के सबका बुरा हाल था। मोरगेन तो फौरन ज़मीन पर लेट गया। इतने में एक खलासी बोला, "यह आवाज़ तो और किसीकी नहीं सिर्फ फ्लिट की आवाज़ हो सकती है!"

कुछ देर तक तो आवाज़ आती रही, फिर आवाज़ इस तरह से बन्द हो गई, जैसे किसीने गाने वाले का गला दिया हो।

सिलवर खुद भी बुरी तरह डर गया था लेकिन फिर वह हिम्मत करके बोला, "इस तरह यहां बैठे रहने से काम नहीं चलेगा। तुम लोग इस तरह डर क्यों रहे हो? यह किसी भूत-

प्रेत की नहीं बल्कि किसी आदमी की आवाज़ मालूम होती है। आओ, चलो देखा जाए। देखें कौन है।"

सिलवर की यह बात सुनकर सबका डर कुछ कम हुआ। लेकिन फिर इतने में आवाज़ सुनाई दी, "डरबी मैक्ग्रो···डरबी मैक्ग्रो···थोड़ी शराब···डरबी !"

यह सुनकर फिर सबका खून ठंडा हो गया। एक आदमी बोला, "अब आगे बढ़ना बेकार है ! चलो, हम लोग लौट चलें।"

इतने में मोरगेन बोला, "मुझे तो बड़ा डर लग रहा है। हे भगवान ! इन्हीं शब्दों को बोलते हुए तो फ्लिंट मरा था ! मुझे अच्छी तरह याद है, ये उसके आखिरी शब्द थे !

लेकिन सिलवर अब घबरा नहीं रहा था। हालांकि उसके होंठ अब भी कांप रहे थे। वह धीरे-धीरे बोला, "लेकिन इस टापू पर डरबी नाम के आदमी को कोई नहीं जानता। बस, हम कुछ गिने-चुने आदमी डरबी को जानते थे ! खैर इस तरह डरने की कोई ज़रूरत नहीं। चलो, मैं आगे-आगे चलता हूं, तुम लोग मेरे पीछे आओ। आदमी हो या भूत-प्रेत, मुझे किसी से कोई डर नहीं है। अगर फ्लिंट मरकर भूत बना है तब भी मैं यहां से अपना काम पूरा किए बिना नहीं लौटूंगा। यहां से थोड़ी ही दूर पर खज़ाना कहीं छिपा होगा। अब इतनी दूर तक आकर क्या यहां से खाली हाथ लौट जाएंगे !"

इतने में एक दूसरा खलासी बोला, "सिलवर की बात सच मालूम होती है। लगता है कि यह आवाज़ फ्लिंट की नहीं है। ज़रा ठहरो, शायद मैंने इस आवाज़ को कहीं सुना है।"

इतने में अचानक सिलवर बोला, "बेनगन ! हो सकता है यह बेनगन की आवाज़ हो ?"

फिर एक खलासी बोला, "हां, ठीक है, यह बेनगन की आवाज़ हो सकती है !"

अब सबका डर खत्म हो गया था। लोगों के चेहरों पर थोड़ी-

सी हिम्मत झलकने लग गई थी। सब लोग सिलवर के पीछे-पीछे चलने लगे। कुछ ही देर में हम ऊपर पहुंच गए। मैंने दूर से देखा कि वहां का एक पेड़ सब पेड़ों से अधिक लम्बा दिखाई दे रहा है। जार्ज मेरी नाम का खलासी सबसे आगे चल रहा था। अचानक कुछ दूर जाकर रुक गया। तब तक सिलवर भी वहां पहुंच गया।

यह क्या ? हमने देखा कि कोई दो-तीन गज़ की दूरी पर एक बड़ा-सा गड्ढा खोदा हुआ था। गड्ढे में लकड़ी के कई छोटे-मोटे टुकड़े दिखाई दे रहे थे। उनमें से एक पर 'वालरस' लिखा था। गड्ढे में कई जगह घास उग आई थी। वालरस फ्लिट के जहाज़ का नाम था।

अब यह स्पष्ट था कि खजाना किसीको मिल गया है। खज़ाना लेकर कोई भाग निकला है। सत्तर लाख पौंड की रकम वहां से गायब हो चुकी है।



14

खजाने को गायब देखकर सबका दिल बैठ गया। हमारे साथियों के चेहरे इस तरह उतर गए जैसे उन्हें बहुत बड़ा सदमा पहुंचा हो। इतनी दूर आने की जो मुसीबतें उठाई हैं, वे सब बेकार साबित हुईं। सारी मेहनत मिट्टी हो गई। उन्हें यह उम्मीद थी कि शायद कुछ हाथ लग जाए।

सिर्फ सिलवर ही अपनी जगह चुपचाप खड़ा था। गड्ढे में उतरकर लुटेरे बड़ी उतावली से इधर-उधर कुछ ढूंढ़ रहे थे। लेकिन किसीके हाथ कुछ नहीं लगा। सिर्फ मोरगेन को सोने

की दो मोहरें मिलीं।

वह सिलवर की ओर देखकर बोला, "देखा, सोने की दो मोहरें ! इतनी मेहनत का फल सिर्फ दो मोहरें ! तुमने जो हीरे-मोती के ढेर की बात कही थी, वह सब कहां है ?" यह कहकर वह दांत पीसने लगा। ऐसा लगा जैसे वह सिलवर को कच्चा चबा जाएगा।

सिलवर बोला, "ज़रा और देखो। देखें शायद कुछ हाथ लग जाए।"

इतने में मेरी गुस्से से थूककर बोला, "भाइयो, तुम लोग सिलवर की बात सुन रहे हो न ! इसने हमें धोखा दिया है। इसे पहले से सब कुछ मालूम है। यह उन लोगों के साथ मिला हुआ है, जो खज़ाना लेकर भाग गए हैं।"

सिलवर बोला, "वाह यह खूब कहा तुमने ! लगता है इस तरह इन लोगों को भड़काकर तुम अपना काम निकालना चाहते हो !"

इतने में कुछ लोग खिसककर मेरे पास आकर खड़े हो गए। एक तरह से उन लोगों ने हम दोनों को घेर लिया था। सिलवर चुपचाप खड़ा रहा, जैसे उसे किसी का डर नहीं था।

जार्ज मेरी बोला, "दोस्तो, ये दोनों जानते हैं कि खज़ाना कहां गया। इनमें से एक लंगड़ा है और एक अभी बच्चा है, और हम लोग पांच आदमी हैं। हमें इनसे डरने की क्या ज़रूरत है ? देखते क्या हो ? इन्हें ज़िन्दा मत छोड़ो !"

इतने में 'ठांय-ठांय !' करके कहीं से बन्दूक छूटी और जार्ज मेरी तथा एक दूसरा खलासी लुढ़ककर गड्ढे में जा गिरे। बाक़ी तीन खलासी अपनी जान बचाकर वहां से भाग निकले। सिर्फ सिलवर और मैं वहां रह गए।

जिधर से बन्दूक की आवाज़ आई थी उधर से हमने देखा कि पेड़ों के पीछे डाक्टर साहब, बेनगन और ग्रे के साथ हाथ में बन्दूक़ लिए चले आ रहे हैं। उनकी बन्दूक से अब भी धुआं निकल रहा

था। उन्हें देखकर सिलवर बोला, "आप बड़े ठीक वक्त पर पहुंचे डाक्टर साहब !"

हम लोग वहीं बैठ गए। डाक्टर ने संक्षेप में हमें पूरी कहानी कह सुनाई। उन्होंने बताया कि हमारे जहाज़ के आने से पहले ही बेनगन ने पूरे टापू को छान मारा था और फ्लिंट का खज़ाना खोज निकाला था। खज़ाने को उसने एक गुफा में छिपा रखा था।

अब सिलवर की और मेरी समझ में आ गया कि डाक्टर ने क्यों नक्शा दे दिया था। बेनगन के पास खाने-पीने की चीज़ों की कमी थी। इसीलिए डाक्टर अपने आदमियों के साथ किला छोड़-कर उसकी गुफा में रहने लगा।

सिलवर बोला, "मैंने जिम को बचाया था इसीलिए शायद आज मेरी भी जान बच गई, वरना जिस तरह आपने जार्ज मेरी को गोली मार दी, उसी तरह मुझे भी मार डाला होता।"

डाक्टर सिर्फ मुस्करा कर रह गए और फिर बोले, "चलो, हम लोग बेनगन की गुफा में चलें।"

कुछ देर बाद हम लोग बेनगन की गुफा के पास पहुंचे। उसकी गुफा के दरवाज़े पर कोई आदमी बन्दूक लेकर पहरा दे रहा था। पास जाकर हमने देखा कि वह ट्रिलोनी था। हम लोगों ने अपने-अपने रुमाल हिलाकर एक-दूसरे का स्वागत किया। सिलवर को देखते ही ट्रिलोनी ने कहा, "तुम बड़े भयानक आदमी हो। तुम्हें तो फांसी पर लटकाना चाहिए। लेकिन डाक्टर का ख्याल करके मैं तुम्हें छोड़ देता हूं।"

सिलवर चुप रहा और चुपचाप ही उसने हम लोगों को धन्यवाद दिया। इसके बाद हम सब गुफा के अन्दर दाखिल हुए। यह गुफा काफी लम्बी-चौड़ी थी। अन्दर एक कोने में एक छोटा-सा झरना बह रहा था। बीच में आग जल रही थी, जिसके पास ही हमारे जहाज़ का कप्तान स्मोलेट लेटा हुआ था। गुफा के एक कोने में सोने की मोहरों और तरह-तरह के सिक्कों के ढेर लगे हुए थे। यही फ्लिंट का खज़ाना था। इतनी मुसीबत उठाने के बाद

आज यह खज़ाना मिला था ! इसकी खोज में अब तक हमारे जहाज़ के सत्रह आदमी अपनी जान गंवा चुके थे ।

मुझे देखकर कप्तान बोला, "अरे जिम, जिम होप्किन्स ! कहां थे तुम अब तक ? अरे सिलवर भी आ गया ? कैसे आ पहुंचे, तुम लोग यहां तक ?"

सिलवर बोला, "आप लोगों ने मुझे जहाज़ पर रसोइये का काम सौंपा था। मैं उस फर्ज़ को पूरा करने के लिए यहां आया हूं।"

उस रात हम लोगों ने खूब आनन्द मनाया। इतनी खुशी हमें अपने जीवन में कभी नहीं हुई थी। हम लोग बेनगन की बड़ी तारीफ कर रहे थे, क्योंकि खज़ाना सुरक्षित रूप से उसी ने हमें दिलवाया।

दूसरे दिन सुबह उठकर खज़ाने को जहाज़ में पहुंचाने का इन्तज़ाम किया गया। यह काम आसान नहीं था। समुद्र का किनारा उस जगह से करीब एक मील दूर था। फिर किनारे से एक नाव पर बैठकर तीन मील दूर जाने पर ही हम जहाज़ पर पहुंच सकते थे । इस तरह कुल मिलाकर चार मील का रास्ता पार करना था । इसके अलावा जो तीन लुटेरे भाग गए थे वे भी मौका पाकर हमपर हमला कर सकते थे ।

इसलिए हममें से एक आदमी पहाड़ के ऊपर बैठकर पहरा देने लगा।ग्रे और बेनगन को नाव में खज़ाना लादकर जहाज़ तक पहुंचाने का काम सौंपा गया। बाकी लोग गुफा से समुद्र के किनारे तक खज़ाना पहुंचाने का काम करने लगे। मैं गुफा में रुक रहा था। उन सिक्कों में न मालूम किन-किन देशों के सिक्के थे। इंग्लैंड, फ्रांस, स्पेन वगैरह यूरोप के कई देशों के लगभग सौ साल के सिक्के उनमें थे। पूरा खज़ाना जहाज़ तक पहुंचाने में हमें करीब पांच-छ: दिन का समय लग गया। इस बीच उन तीन लुटेरों का कोई पता नहीं चला ।

हम लोगों ने सोचा कि उन तीनों को इसी टापू पर छोड़कर हम लोग चले जाएं। उन लोगों के लिए कुछ हथियार, खाने-पीने की कुछ चीज़ें, दवाइयां और कुछ कपड़े वगैरह छोड़ दिए

और फिर हमने टापू से विदा ली।

जब हमारा जहाज़ चलने की तैयारी करने लगा तो वे तीनों लुटेरे किनारे पर आ खड़े हुए और घुटनों तक पानी में आगे बढ़कर चिल्लाने लगे, "हम लोगों को भी लेते जाओ! हम माफी मांगते हैं, हमें छोड़कर न जाओ!"

हम लोगों को उनपर दया आई, लेकिन उन्हें फिर से जहाज़ में लेना खतरे से खाली नहीं था। रास्ते में वे ज़रूर लड़ाई करते। यही सोचकर डाक्टर ने उन्हें चिल्लाकर जवाव दिया, "हम लोग जा रहे हैं, लेकिन तुम लोगों को ऐसे नहीं छोड़कर जा रहे हैं। तुम्हारे लिए खाने-पीने की चीजें, औज़ार और कुछ हथियार वगैरह हमने वहीं छोड़ दिए हैं। तुम लोग अपने लिए एक नाव बना लेना, फिर घर लौट आना!"

और इस तरह हमारा जहाज़ आगे बढ़ा। थोड़ी ही देर में टापू आंख से ओझल हो गया। अब चारों ओर पानी ही पानी था।

जहाज़ पर हम लोग बहुत थोड़े-से ही आदमी थे। इसीलिए हम लोगों को खूब मेहनत करनी पड़ती थी। कुछ ही समय में हम लोग बहुत थक गए। यह तय किया गया कि रास्ते में किसी छोटे बन्दरगाह पर जहाज़ रोक देंगे और वहां से कुछ खलासियों को ले लेंगे। शाम तक हमारा जहाज़ एक बन्दरगाह में लगा। मैं डाक्टर और ट्रिलोनी के साथ जहाज़ से उतरकर किनारे पर घूमने लगा। वहां तरह-तरह की चीज़ें खाने को मिल रही थीं। बहुत दिनों से हम लोगों ने मिठाई नहीं खाई थी। इसलिए हम लोग एक दुकान में घुस गए। काफी देर के बाद हम लोग लौटकर जहाज़ पर पहुंचे। फौरन बेनगन दौड़ता हुआ हमारे पास आया और कहने लगा, 'सिलवर एक नाव में बैठकर भाग गया! जाते-जाते वह एक छोटी-सी थैली लेता गया है। शायद तीन-चार सौ मोहरें ले गया है।"

सिलवर के इस तरह अचानक चले जाने से हम सबको बड़ी

खुशी हुई। किसी ने कहा, "चलो अच्छा हुआ, आफत टली। बहुत सस्ते में जान छूटी।"

कुछ दिनों की यात्रा के बाद हम लोग ब्रिस्टल के बन्दरगाह में आ पहुंचे। खज़ाने को हम लोगों ने बराबर हिस्से में बांट लिया। अपने-अपने हिस्से को जिस तरह जिसका मन आया खर्च करने लगा। कुछ लोगों ने तो हफ्ते दो-हफ्ते में ही सारा रुपया खा-पीकर खत्म कर दिया। और कुछ ने अपनी ज़िन्दगी-भर के लिए बचाकर रख लिया। कप्तान स्मोलेट ने जहाज़ का काम छोड़ दिया और आराम से ज़िन्दगी काटनी शुरु की। ग्रे ने शादी कर ली और अपना एक जहाज़ खरीद लिया। बेनगन कुछ ही दिनों में सारा रुपया खत्म करके फिर से भिखमंगा हो गया। सिलवर का क्या हुआ, इसका किसी को पता नहीं चला। डाक्टर और ट्रिलोनी के साथ मैं अपने घर लौट आया। अपनी मां से मिलकर मैं कितना सुखी हुआ, इसका अन्दाज़ा आसानी से लगाया जा सकता है।

लेकिन अब भी मैं उस विचित्र टापू की बात भूला नहीं हूं। रात कभी-कभी अब भी मैं वहां के सपने देखता हूं।

मुद्रक : के० के० प्रिंटर्स, दिल्ली 20581

किशोरों के लिए साहित्य

ये पुस्तकें विश्वविख्यात उपन्यासों एवं कहानियों के किशोरोपयोगी संक्षिप्त हिन्दी रूपान्तर हैं। इनकी भाषा अत्यन्त सरल और शैली बड़ी रोचक है। बालक बड़े चाव से इन पुस्तकों को पढ़ेंगे।

गुलिवर की यात्राए (Gulliver's Travels)
राबिन्सन क्रूसो (Robinson Crusoe)
खज़ाने की खोज में (Treasure Island)
चांदी का बटन (Kidnapped)
कठपुतला (Pinnochio)
वीर सिपाही (Ivanhoe)
चमत्कारी तावीज़ (Talisman)
तीसमार खां (Don Quixote)
तीन तिलंगे (Three Musketeers)
काला फूल (Black Tulip)
कैदी की करामात (The Count of Monte Cristo)
डेविड कापरफील्ड (David Copperfield)
बर्फ की रानी (Andersen's Fairy Tales)
ईसप की कहानियां (Aesop's Fables)
मोबीडिक (Moby Dick)
जंगल की कहानी (Call of the Wild)
जादूनगरी (Alice in Wonderland)
मूंगे का द्वीप (Coral Island)
बहादुर टॉम (Tom Sawyer)
परियों की कहानियां (Grimm's Fairy Tales)
रॉबिनहुड (Robinhood)
जादू का दीपक (Stories from Arabian Nights)
अस्सी दिन में दुनिया की सैर (Around the World in 80 Days)
समुद्री दुनिया की रोमांचकारी यात्रा (20 Thousand Leagues Under the Sea)
सिंदबाद की सात यात्राएं (The Seven Voyages of Sindbad)
काला घोड़ा (Black Beauty)
साहसी राबिन्सन (Swiss Family Robinson)

शिक्षा भारती, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६